हँसती दुनिया

₹ 10/-

वर्ष 42 अंक 3
मार्च 2015

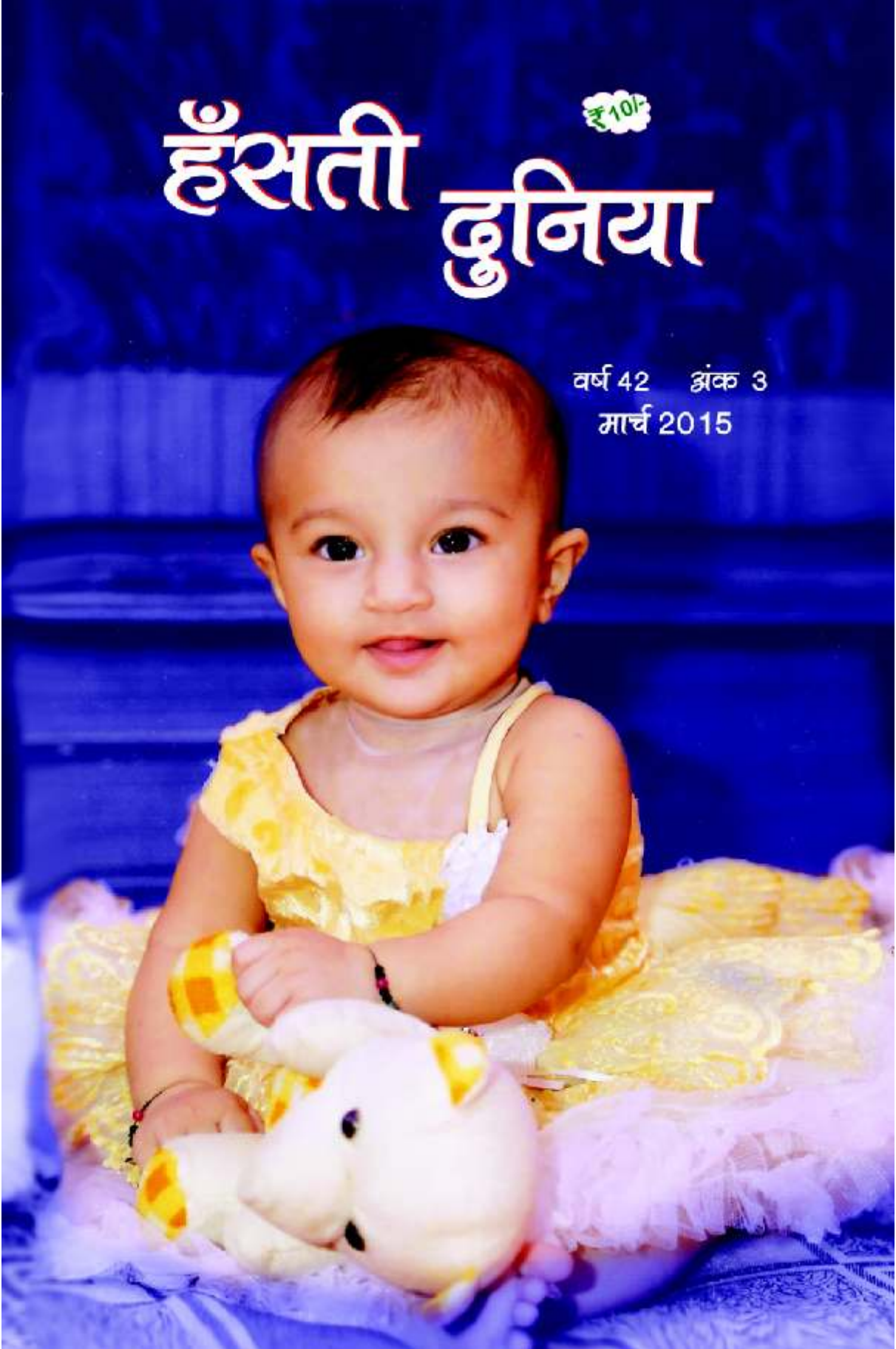

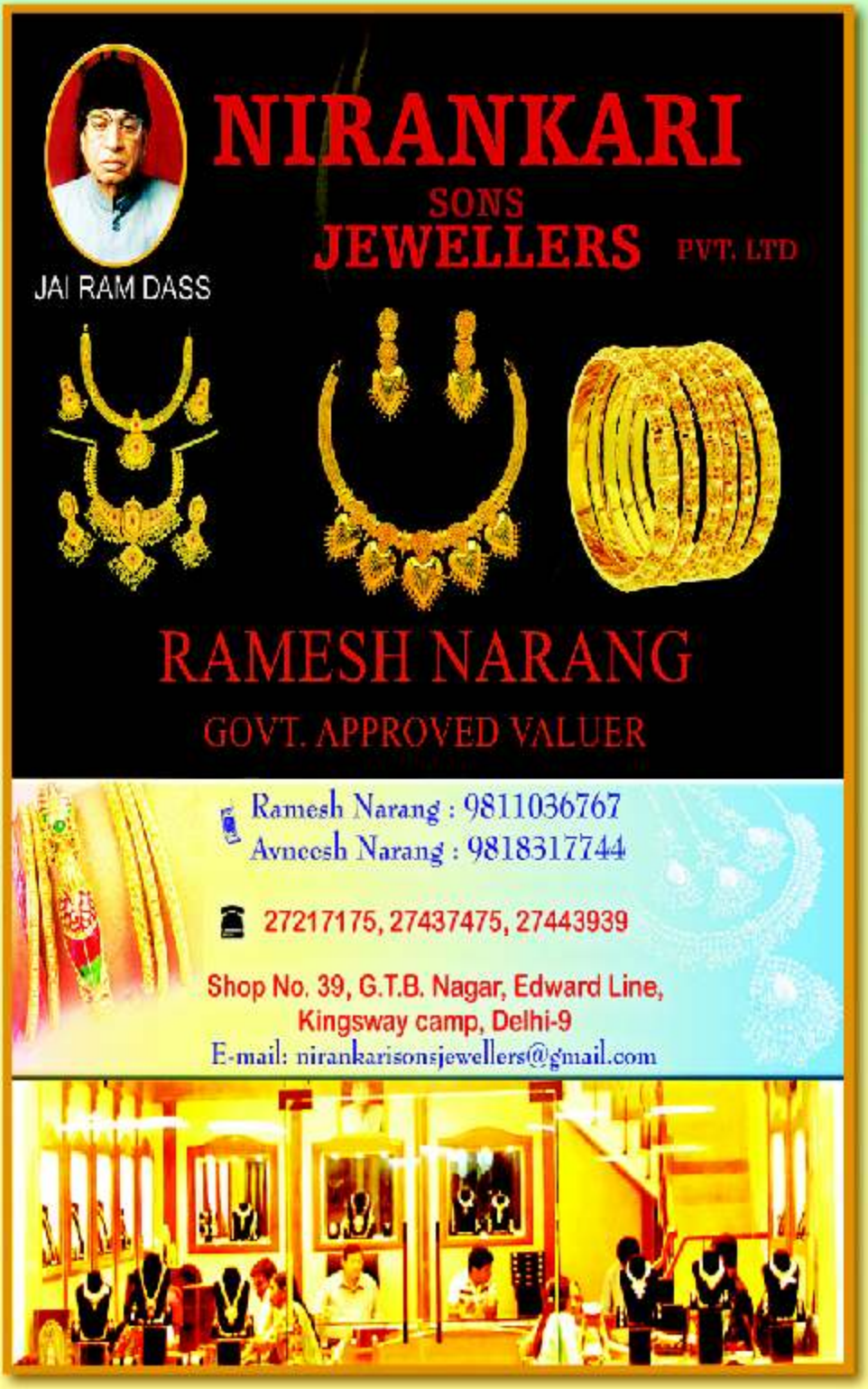
JAI RAM DASS
NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD
RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER
Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744
27217175, 27437475, 27443939
Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 42
अंक 4

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

अप्रैल
2015

स्तम्भ

सबसे पहले 4
अनमोल वचन 5
जन्मदिन मुबारक 11
समाचार 17
वर्ग पहेली 20
क्या आप जानते हैं? 36
पढ़ो और हँसो 46
रंग भरो परिणाम 48
आपके पत्र मिले 65

चित्रकथा

दादा जी 13
किट्टी 52
फोटो फीचर 56–57

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

तुम्बड़ी का स्वाद — शिवचरण मंत्री 7
सच्चा–सुख — महेन्द्र सिंह शेखावत 9
क्यों कहते हैं युधिष्ठिर को धर्मराज — महेन्द्र सिंह शेखावत 10
गबलू का गला — राजकुमार जैन 'राजन' 21
अक्ल आ गई — फारुख हुसैन 31
मेरा कौन? — डॉ. दर्शन सिंह आशट 37
अंकित प्रथम रहा — दिनेश राय 41
बेईमानी का फल — हरजीत निषाद 59

कविताएं

माँ की ममता — हरजीत निषाद 6
नन्हे–मुन्नों ! — मदन 'शेखपुरी' 12
मिलकर रहना — महेन्द्र सिंह शेखावत 12
ऋतु भी रूप बदलती है — डॉ. दिनेश चमोला 19
पेड़ लगाएंगे — श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 34
पेड़ — सुरेन्द्र कुमार गिरी 51
पेड़ — श्यामसुन्दर गर्ग 51
मीठी बोली — डॉ. परशुराम शुक्ल 58

विशेष/लेख

पहेलियां — राधा नाचीज़ 26
बुलबुल का रंगीन संसार — दीपांशु जैन 27
सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी — विकास अरोड़ा 30
स्टेथेस्कोप का जन्म — राधेलाल 'नवचक्र' 43
ऐसे भी हैं हेलिकॉप्टर — किरण बाला 61
फ्लोरेंस नाइटिंगेल — पृथ्वीराज 63

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	20 YEARS
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रभारी पत्रिका विभाग : सी. एल. गुलाटी

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सबसे पहले

हम सब काम करते हैं, बिना काम के शायद ही कोई रह सकता है। अक्सर हर काम करने के पीछे कोई न कोई मकसद / लक्ष्य तो होता ही है। परन्तु कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जिनको करने का न तो कोई लाभ होता है न ही उसकी सार्थकता। इन्सान को गतिशील रहने के लिए कोई न कोई कार्य का सहारा लेना ही पड़ता है।

दो मित्र आपस में बातें कर रहे थे। एक कह रहा था कि मैं अपने माता–पिता को खुश करने के लिए, इन्हें तीर्थ यात्रा पर घुमाने लेकर गया और वह इस बात को बड़े गर्व से बता भी रहा था।

दूसरे मित्र ने कहा – मैं भी अपने माता–पिता को अपनी खुशी से पहाड़ों की सैर कराने लेकर गया।

प्यारे साथियों, यहाँ बात तो केवल इतनी ही समझने योग्य है कि दोनों मित्रों का लक्ष्य एक है, फिर भी उनके कार्य की गुणवत्ता में बहुत फर्क है। पहले मित्र का दृष्टिकोण दूसरे को खुश करने का है लेकिन दूसरे मित्र के दृष्टिकोण में कार्य करने में भी खुशी निहित है।

इसी तरह से अगर हम किसी भी कार्य को खुशी–खुशी करते रहेंगे तो कार्य भी हो जाएगा और खुशी हमेशा बनी रहेगी परन्तु अगर हम किसी और को खुश करने के लिए कार्य करेंगे तो वह कार्य कई बार मजबूरी में भी हो सकता है। बिना मन के भी हो सकता है या उस कार्य को करते समय बोझिल भी महसूस कर सकते हैं। हर समय दूसरों को खुश कर पाना संभव भी नहीं है। हमें दूसरों की खुशी के लिए कार्य तो करना ही है परन्तु उसके कार्य में अपनी खुशी भी शामिल कर देंगे तो वह कार्य बहुत ही मंगलकारी हो जाएगा।

इसलिए हम जो भी कार्य करें खुशी–खुशी करें। फिर चाहे वह पढ़ाई हो, खाना बनाना हो या खाना खाना हो। किसी की सहायता करनी हो, इत्यादि इत्यादि। फिर हर कार्य हमें आनन्द ही आनन्द प्रदान करेगा। एक बार अगर हमें आनन्द का अनुभव हो गया तो फिर इसी अनुभव को हमेशा अपना ही बना कर रखेगें। –विमलेश आहूजा

अनमोल वचन

★ आशा ईश्वर के द्वारा मानव को दिया गया सुन्दर उपहार है जो हमें निरन्तर सीखने और प्यार भरा जीवन जीने का मार्ग दिखाती है।

★ एक पेड़ से लाखों माचिस की तीलियों का निर्माण हो सकता है लेकिन एक ही माचिस की तीली लाखों पेड़ों को जलाकर खाक कर भी सकती है। इसी तरह एक ही नकारात्मक विचार सैकड़ों सुन्दर सपनों को नष्ट कर सकता है। इसलिए अगर प्रगति करनी है तो सोच को हमेंशा सकारात्मक बनाएं रखना चाहिए।

★ विश्व शान्ति का अध्यात्म ही एक–मात्र साधन है।

★ भगवान का आश्रय ले लेने वाले को किसी दूसरे के आश्रय की आवश्यकता नहीं रहती।

★ किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त फिजूल न गवाओ उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

★ जो संयमित और मर्यादापूर्ण जीवन बिताते हुए सही रास्ते पर चलता है, वह कभी कष्ट में नहीं रहता।

★ माता–पिता बच्चों को जीवन देते हैं, जबकि अध्यापक एक अच्छे जीवन को यकीन में बदलते हैं।

★ अगर हम किसी के रास्ते में फूल नहीं बिछा सकते तो काँटे भी नहीं बिछाने चाहिए।

★ ज्ञान से बढ़कर कोई दौलत नहीं है।

★ अगर आप पहाड़ों को हिलाना चाहते हैं तो पहले पत्थरों को हिलाना सीखें।

★ लालची व्यक्ति सारा संसार प्राप्त करके भी भूखा रह जाता है।

– प्रस्तुति : निष्ठा आनन्द (लुधियाना)

कविता : हरजीत निषाद

माँ की ममता

माँ की ममता करुणा न्यारी,
जैसे दया की चादर।
शक्ति देती नित बच्चों को,
बन अमृत की गागर।

साया बन कर साथ निभाती
चोट न लगने देती।
पीड़ा अपने ऊपर लेती,
सदा–सदा सुख देती।

माँ का आँचल खुशियों की है,
रंगा–रंग फुलवारी।
इसके चरणों में जन्नत है,
आनंद की किलकारी।

माँ का प्यारा रूप सलोना,
बिलकुल रब के जैसा।
प्रेम के सागर सा लहराता,
इसका अपनापन है ऐसा।

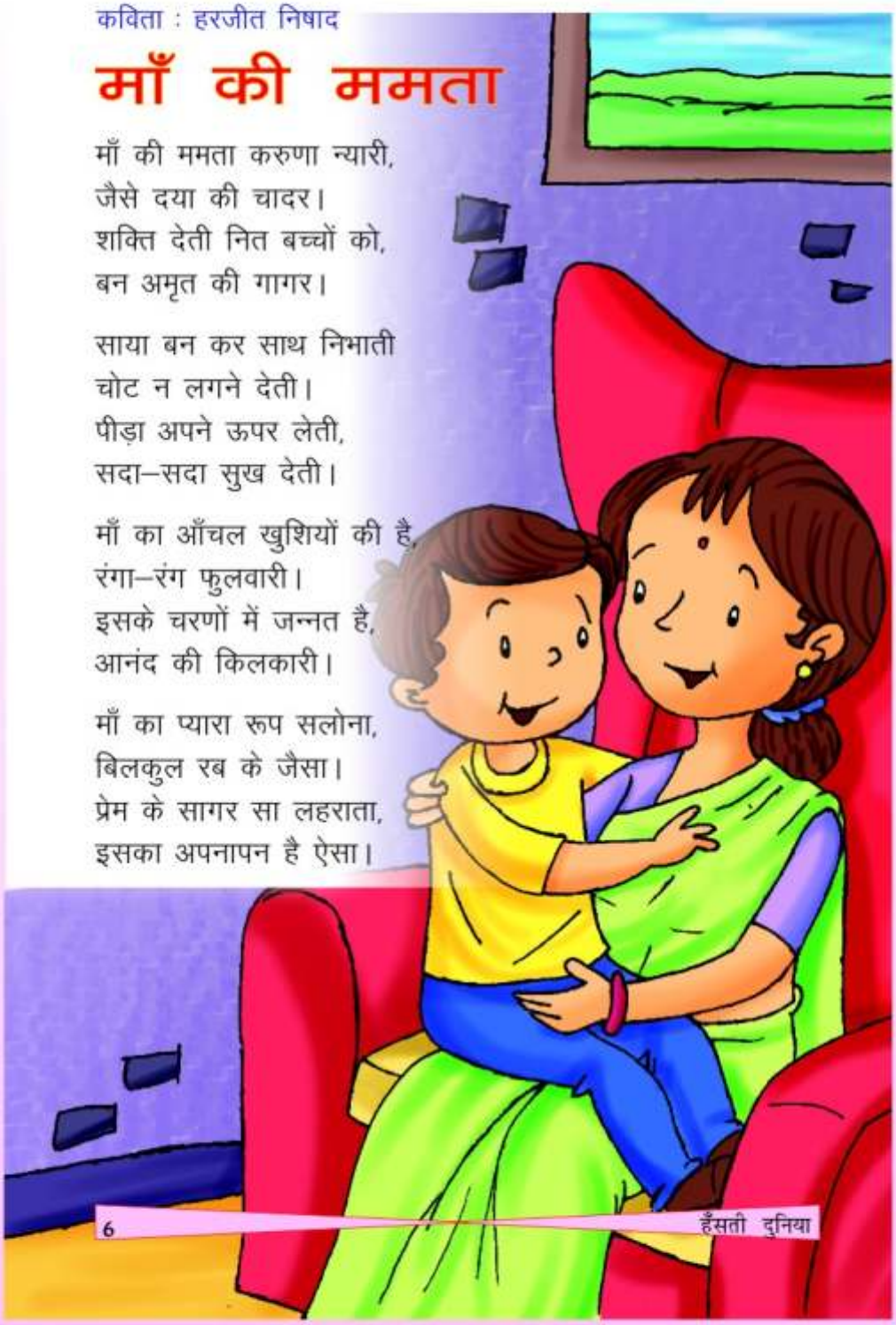

महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ। पाण्डव इसमें विजयी हुए पर प्रसन्न नहीं थे। युधिष्ठर इससे बहुत दुःखी थे। वे गहन विषाद में थे। क्योंकि इस महायुद्ध में उनके ही वंश कौरवों का समूल नाश होने के साथ–साथ अनेक महावीर योद्धा कर्ण, गुरु द्रोण, भीष्म पितामह आदि मारे गये थे।

युधिष्ठर और पाण्डवों के विषाद को दूर करने के लिए तीर्थ यात्रा का आयोजन किया। पाण्डवों ने महाभारत के अजय पुरोधा, गीता रचयिता श्रीकृष्ण को इस यात्रा में साथ चलने का आग्रह किया। कृष्ण ने तीर्थयात्रा के लिए स्पष्ट मना कर दिया, पर पाण्डवों के आग्रह पर कृष्ण ने एक तूम्बड़ी पाण्डवों को सौंप कर कहा, 'तुम इस तूम्बड़ी को मेरा रूप मानना। इससे श्रद्धा से तीर्थ स्नान, दर्शन आदि करवाना। इससे तीर्थ के सारे धार्मिक कृत्य करवाना। तूम्बड़ी को तुम मेरा ही रूप मानना...।

पाण्डवों को कृष्ण की बात माननी पड़ी। वे तूम्बड़ी को कृष्ण का रूप मानकर तीर्थ यात्रा को निकले। तीर्थ स्थानों पर पहुँच कर वे कृष्ण के कथानानुसार तूम्बड़ी को नदी, सरोवर, कूप आदि में विधिवत स्नान करवाने, तीर्थ स्नान की परम्परानुसार पूजा, अर्चना करवाते और देव दर्शन करवाते। संक्षेप में पाण्डव तूम्बड़ी को कृष्ण मानकर हर तीर्थ

स्थल पर एक तीर्थ यात्री की तरह सारे धार्मिक कार्य सम्पन्न करवा कर बड़े प्रसन्न होते।

एक–एक करके कई तीर्थ स्नान यथा हरिद्वार, ऋषिकेश, गया, काशी, प्रयाग, पूरी, गंगासागर, उज्जैन आदि की यात्रा पूरी हुई और पाण्डव सकुशल तीर्थ यात्रा करके पुनः हस्तिनापुर पहुँचे।

पाण्डवों ने हस्तिनापुर पहुँच कर कृष्ण के दर्शन किये और तूम्बड़ी कृष्ण को बड़े आदर से सौंप कर कहा, 'भगवन्, आपकी कृपा से सारी यात्रा सकुशल पूरी हो गई। आप द्वारा प्रदत्त इस तूम्बड़ी ने भी...।' और तूम्बड़ी कृष्ण को सौंप दी।

कृष्ण से तूम्बड़ी हाथ में ली और उसे बड़े जोर से जमीन पर गिरा दिया। जमीन पर गिरते ही तूम्बड़ी टुकड़े–टुकड़े हो गई। पाण्डव सहमे से यह देखते रहे।

पृथ्वी पर बिखरे कतिपय छोटे–छोटे टुकड़ों को श्रीकृष्ण ने उठाया और पाण्डवों को तूम्बड़ी के नन्हें टुकड़ों को देकर कहा, ''यह तूम्बड़ी भगवान का प्रसाद है। इसे ग्रहण करो।''

कृष्ण का आदेश पालन हुआ। सभी ने तूम्बड़ी का प्रसाद मुँह में रखा, पर सबके मुँह बिदके थे। कड़ुवाहट से थूकने का मन हो रहा था पर प्रसाद को कैसे थूका जाये?

सबके बिदके मुँह को देखकर कृष्ण ने कहा, ''इस तूम्बड़ी को आपने पवित्र तीर्थ स्थलों पर स्नान करवाए, देव दर्शन करवाए, तीर्थ स्थल के धार्मिक कृत्य करवाए। ...पर इसने अपना मूल गुण जैसे कड़ुवापन नहीं छोड़ा वैसे ही संसार के दुष्ट लोग अपना स्वभाव नहीं छोड़ते, बदलते भी नहीं। अतः कौरवों का नाश करके तुमने ठीक किया। अब प्रसन्न रहो और राज्य करो।''

इतना कह कर कृष्ण वहाँ से चल पड़े। पाण्डव अब युद्ध की कड़ुवाहट को भूलकर प्रसन्न रहने लगे। सुखी होकर राज का सुख भोगने लगे।

प्रेरक–प्रसंग : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

सच्चा–सुख

बात पुरानी है। एक बार भक्त प्रहलाद से दानवों ने पूछा– हे प्रहलाद! सच्चा–सुख कैसे प्राप्त होता है?

यह सुनकर भक्त प्रहलाद हँस पड़ा। फिर बोला– सच्चा–सुख पाना बहुत कठिन है। यह तुम्हारे लिए असम्भव है क्योंकि तुम सच्चा–सुख पाने वाले मार्ग पर नहीं चल सकते।

दानवों ने सच्चे–सुख के मार्ग को बताने के लिए भक्त प्रहलाद से बार–बार अनुरोध किया तो प्रहलाद बोला– जन–कल्याण के द्वारा ही सच्चा–सुख प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु तुम यह नहीं कर सकते क्योंकि बचपन खेल–कूद और शैतानी में गुजारते हो, युवा होने पर भोग–तृष्णा में पाप करते हो और वृद्धावस्था में तुम्हारे पास पछताने के अतिरिक्त कुछ नहीं बचता है। सच्चा–सुख तो कल्याण–कार्यों के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इसी में आत्मानंद एवं परमानंद प्राप्त होता है।

प्रहलाद ने फिर कहा– मैं भी तो दानवराज ही हूँ परन्तु जन–कल्याण में लगा हूँ। ईश्वर पर भरोसा करता हूँ। इसीलिए सुखी हूँ। तुम भी ऐसा कर लो तुम्हारा भी कल्याण होगा।

–याद रखो! किसी भी उम्र में प्रभु–सुमिरण तथा दुष्कर्मों का त्याग कर के उनका प्रायश्चित कर लेने से सद्मार्ग साफ दिखाई देता है। उस पर चलते रहने से गुरु–कृपा होती है तब सच्चा–सुख मिलता है।

◆◆◆

कथा : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

क्यों कहते हैं युधिष्ठिर को धर्मराज

बात पुरानी है। एक दिन श्रीकृष्ण के एक मित्र ने उनसे पूछा– आप युधिष्ठिर को धर्मराज क्यों कहते हैं?

यह सुनकर श्रीकृष्ण बोले– क्योंकि युधिष्ठिर धर्मराज कहलाने के योग्य हैं इसीलिए उन्हें धर्मराज कहना उचित है।

–युधिष्ठिर धर्मराज कहलाने के योग्य क्यों हैं?– मित्र ने पुनः प्रश्न किया।

तब श्रीकृष्ण बोले– इसका जवाब मैं तुम्हें सायंकाल ही दे पाऊंगा।

उस समय पांडव और कौरव सेना के बीच महाभारत का युद्ध चल रहा था। युद्ध समाप्त होने के उपरांत युधिष्ठिर अपना वेश बदल कर कुरुक्षेत्र के मैदान में जाया करते थे।

उस दिन अन्य पांडव पुत्र भी अपना वेश बदल कर युधिष्ठिर के पीछे–पीछे यह जानने के लिए चल पड़े कि भैया कहाँ जाते हैं और किसलिए जाते हैं।

आगे चलकर उन्होंने देखा कि युधिष्ठिर युद्ध के मैदान में सभी घायलों की सेवा–सुश्रुषा और परिचर्या में लगे हुए हैं। तब उन्होंने युधिष्ठिर से इस पुण्य कार्य के लिए वेश बदलने का कारण पूछा।

युधिष्ठिर ने कहा– यदि मैं वेश बदल कर नहीं आता तो कौरव सेना के घायल–पीड़ित सैनिक मुझे अपना कष्ट नहीं बतलाते और मैं उनकी सच्ची सेवा के अधिकार से वंचित रह जाता, इसलिए मुझे वेश बदलना पड़ा। इतना सुनते ही वेश बदले हुए अन्य पाण्डव पुत्र वहाँ से चुपचाप चल पड़े।

यह सम्पूर्ण दृश्य भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र को दिखलाते हुए कहा– इसीलिए सच्चे अर्थों में युधिष्ठिर धर्मराज कहलाने के योग्य हैं क्योंकि उनकी सेवा सबके लिए है, चाहे कोई उनका विरोधी ही क्यों न हों।

इसी कारण आज भी युधिष्ठिर को धर्मराज के नाम से भी जाना जाता है।

जन्मदिन मुबारक

चाहत (राजिम)

दर्शन (धूलै)

सार्थक (कानपुर)

कनिष्क (फगवाड़ा)

नित्या (गुवाहटी)

नीलांशा (चण्डीगढ़)

कार्तिक (धमी)

प्रीति (अमलनेर)

लेखाश्री (कोटा)

कुणाल (दिल्ली)

नदीशप्रीत (बूरमाजरा)

सुदीपा (कानपुर)

कृष्णा (फरीदाबाद)

श्रेयांश (डालनवाला)

जयते (राजिम)

मयंक (पटना)

प्रीति (दिल्ली)

जसमीत (अबोहर)

निधि (इच्छलकरंजी)

अनीशा (ओबरा)

ऐंजल (गुवाहाटी)

प्रिया (राजिम)

सोनल (नागपुर)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

मिलकर रहना

कटु वचन नहीं,
किसी से कहना।
झगड़ा कभी न,
किसी से करना।

आये संकट,
हँसकर सहना।
नफ़रत कभी न,
किसी से करना।

सुख–दुःख में भी,
हँसते रहना।
मेहनत सदा,
डट कर करना।

आपस में सब,
मिल कर रहना।
भेदभाव न
किसी से करना।

कविता : मदन 'शेखपुरी'

नन्हे–मुन्नो !

ठीक समय पर पढ़ने जाना।
वापस ठीक समय पर आना।
अपने जीवन का मक़सद तुम
नन्हे–मुन्नो! यही बनाना।
ठीक समय पर पढ़ने जाना...

कद्र समय की जिसने की है
उसकी झोली रही भरी है।
सोनू–मोनू सुनो ध्यान से
बातों में न समय गँवाना।
ठीक समय पर पढ़ने जाना...

खुद चलकर मंजिल है आती
कदमों में उसके झुक जाती,
इज़्ज़त जिसने करी वक्त की
जिसने मोल समय का जाना।
ठीक समय पर पढ़ने जाना...

दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
बच्चों! आज मैं तुम्हें दो दोस्तों की कहानी सुनाता हूँ।
एक शहर में दो बहुत पक्के मित्र थे और बहुत खुश रहते थे।
भगवान ने दोनों को भिन्न - भिन्न साँचे में ढ़ाला था।
परन्तु वह शरारतें करने की योजना बनाता रहता
अरूण
अजय
एक मेहनती सच्चा निर्भीक
परन्तु फिर भी वे अच्छे मित्र थे।

स्कूल में एक दिन दोनों अपनी-2 सीट पर बैठ कर पढ़ रहे थे।
इतने में अध्यापक महोदय कक्षा से कुछ देर के लिए बाहर चले गये।
अध्यापक महोदय के जाते ही पूरी कक्षा ने ऊधम करना शुरू कर दिया।
अजय ने सोचा क्यों न कोई ऐसा काम किया जाए जिससे सबको मज़ा आ जाये।
और अजय को शरारत करने की सूझी।

अजय ने अरुण को धक्का मारा तो वह खिड़की के शीशे से जा टकराया।
और धक्का लगने से शीशा टूट गया।
यह दृश्य देख पूरी कक्षा शान्त हो गई।
पूरी कक्षा चुपचाप अपनी सीट पर बैठ गई और अचानक अध्यापक महोदय आ पहुँचे।
चुप्पी का रहस्य जानने के लिए अध्यापक अपनी नज़रें घुमाने लगे।

और उनकी नज़र टूटे हुए शीशे पर पहुँची। और वे क्रोधित हो गये।
अब उन्होने सबसे पूछना शुरू किया और अजय की बारी आई तो उसने साफ इन्कार कर दिया।
अरूण ने शीशा तोड़ने का दोष अपने ऊपर ले लिया।
और अध्यापक अरूण को सजा देने लगे।
यह देख अजय का हृदय पसीज गया उसकी आँखों में आँसू आ गये।
अजय ने अरूण से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी और आगे से सही तथा सच्चाई के रास्ते पर चलने का प्रण किया।

मंगल पर मिले पानी के नये साक्ष्य

वॉशिंगटन। भारतीय मूल के वैज्ञानिकों के एक दल के नेतृत्व में 'नासा' के क्यूरोसिटी रोवर ने मंगल पर पानी की मौजूदगी के नये साक्ष्य खोज निकाले हैं। इन साक्ष्यों से ये संकेत मिलते हैं कि सौरमंडल में पृथ्वी के साथ सबसे अधिक समानता रखने वाला लाल ग्रह सूक्ष्मजीवीय जीवन के लिए उपयुक्त था।

'नासा' की ओर से मंगल पर भेजे गए 'क्यूरोसिटी' नामक रोवर द्वारा ली गई तस्वीरें और जुटाए गए आंकड़े दर्शाते हैं कि 'गेल क्रेटर' के तल में कभी एक झील या कई झीलों के रूप में नदियां बहती थीं। गेल क्रेटर किसी अंतरिक्षीय चट्टान के कारण मंगल की सतह पर बना एक बड़ा गड्ढा है।

'नासा' के अनुसार गेल क्रेटर में क्यूरोसिटी की खोजों की व्याख्या कहती है कि प्राचीन काल के मंगल पर एक ऐसा वातावरण था, जो लाल ग्रह के विभिन्न स्थानों पर पुरानी झीलों का निर्माण कर सकता था। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि मंगल के माउंट शार्प का निर्माण कई लाख वर्षों तक एक बड़ी झील के तल में तलछट जमा होने के कारण हुआ था।

'नासा' की जेट प्रपल्शन लेबोरेटरी में क्यूरोसिटी के डिप्टी प्रोजेक्ट साइंटिस्ट भारतीय मूल के वैज्ञानिक अश्विन वासावदा ने कहा, 'यदि माउंट शार्प के बारे में हमारी परिकल्पनाएं कायम रहती हैं तो इनसे उन

धारणाओं के लिए चुनौती पैदा होगी, जिसके अनुसार, गर्माहट और नमी वाली स्थितियां क्षणिक स्थानीय थीं या फिर मंगल की जमीन के नीचे ही मौजूद थीं।

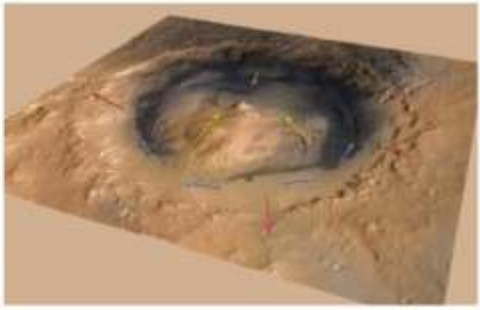

शोधकर्ताओं ने कहा कि सतह से ऊपर निकले चट्टानी अंशों की मोटाई दर्शाती है कि झील या झीलें लाखों साल तक गेल क्रेटर के 154 किलोमीटर गहरे तल में रही होंगी। हालांकि झील संभवतः सूख गई होगी और फिर कई बार पुनः भर गई होंगी। उन्होंने कहा, 'एक परिपूर्ण व्याख्या यह है कि मंगल के प्राचीन और सघन वातावरण के कारण तापमान बढ़कर हिमकारी ताप से ऊपर पहुँच गया लेकिन अब तक हमें यह नहीं पता कि वातावरण ने यह किया कैसे?

माउंट शार्प लगभग 5 किलोमीटर ऊंचा है और इसके निचले हिस्से में सैकड़ों चट्टानी परतें हैं। क्यूरोसिटी के प्रोजेक्ट साइंटिस्ट और कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रोफेसर जॉन ग्रोटजिंगर ने कहा, 'हम माउंट शार्प का रहस्य सुझलाने के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'जहाँ इस समय एक पर्वत है, हो सकता है एक समय वहाँ झीलें रही हों।'

क्यूरोसिटी इस समय माउंट शार्प की निचली तलछट परतो का अध्ययन कर रहा है। नदियां झील में रेत और मिट्टी को लेकर आई, जिसके चलते नदी के मुहानों पर जमाव हो गया और डेल्टा बन गए। यह ठीक वैसे ही है, जैसे पृथ्वी पर नदियों के मुहानों पर पाए जाते हैं।

क्यूरोसिटी साइंस के दल के सदस्य और लंदन के इंपीरियल कॉलेज के संजीव गुप्ता ने कहा, 'हमें अवसादी शैल मिली हैं, जो एक के ऊपर एक प्राचीन डेल्टाओं के ढेर का संकेत देती हैं।' उन्होंने कहा, 'क्यूरोसिटी नदियों की बहुलता वाले पर्यावरण से निकलकर झीलों की बहुलता वाले पर्यावरण में प्रवेश कर गया है।'(भाषा)

(संग्रहकर्ता : बबलू कुमार)

कविता : डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

ऋतु भी रूप बदलती है

जैसे जीवन बदला करता,
पल–पल अपने रूप नए।
वैसे ही ऋतुएं व मौसम,
भी धरते हैं भेष नए।।

प्रकृति सदा रहती है वह ही,
ठीक मनुज के जीवन सी।
जैसे रहती देह एक है,
उस पर नाम बदलते ही।।

नाम एक है लेकिन उस पर,
कभी जवानी और बुढ़ापा।
रूप बदलती रहती काया,
अदभुत ईश्वर तेरी माया।।

समय बहुत बलवान कि करता,
बाल को भी इक दिन बूढ़ा।
कभी चमक, खुशबू सा जीवन,
और कभी हो रहता कूड़ा।।

जीवन की ऋतुएं भी पल–पल,
भेष बदलती रहती हैं।
कर्मनिष्ठ हो नियत धर्म से,
सदा कार्य वे करती हैं।।

जिनने सत्य के रंग में रंगकर,
जीवन का उपयोग किया है।
सत्य यही है कि उसने ही,
आनन्द का उपभोग किया है।।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

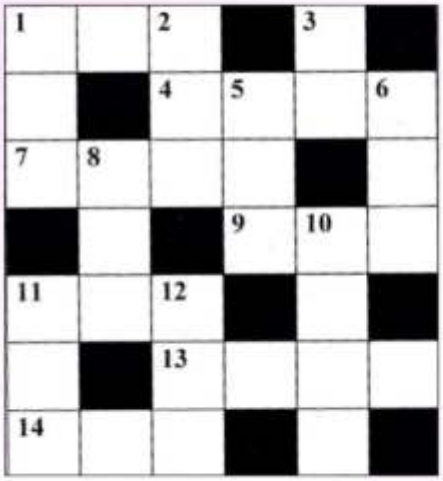

बाएं से दाएं →

1. सुभद्रा रिश्ते में भगवान श्रीकृष्ण की ... थी
4. ब्रिटिश भारत के पहले गवर्नर ... का नाम वारेन हैस्टिंग था।
7. गगन का एक पर्यायवाची शब्द।
9. बेमेल शब्द छांटिए : दरार, इंदौर, जयपुर, सीकर।
11. सन् 1969 में ... गोरखपुरी ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले उर्दू के पहले साहित्यकार बने।
13. भारत का सबसे बड़ा गुम्बज 'गोल गुम्बज' जिस शहर में स्थित है।
14. इस वाक्य में छुपा विष का एक पर्यायवाची शब्द ढूंढिए : शादी में दहेज हरगिज नहीं लेना चाहिए।

ऊपर से नीचे ↓

1. 'साबरमती', 'मथुरा' और 'युआन' शब्दों के दूसरे अक्षरों को मिलाकर बनने वाला एक हरी सब्जी का नाम।
2. नगमा दक्षिण दिशा और नजमा उत्तर दिशा की तरफ मुँह करके खड़ी है। किसका दायां हाथ पूर्व दिशा की तरफ होगा?
3. ... की मुर्गी दाल बराबर यानि घर की वस्तु की कद्र न होना।
5. ननदोई की पत्नी।
6. पत्थर की ... यानि पक्की बात।
8. बेहसहारा का विपरीत शब्द।
10. छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी।
11. इंदिरा गाँधी के पति का नाम .... गाँधी था।
12. जिस पुरातन सन्त की पत्नी का नाम लोई था।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं।)

गबलू बंदर बाहर लान में बैठ कर अजीब–अजीब आवाजें निकाल रहा था। उसे ऐसा करते देख उसके पिताजी टोमी बंदर ने कहा– क्यों ऐसी अजीब आवाज़े निकालते हो? तुम्हारा गला खराब हो जाएगा।

–रात को टी.वी. में रेलगाड़ी चलती हुई दिखाई गई थी। पुलिस गाड़ी के साइरन की आवाज़ भी मैंने सुनी थी। मैं गले से रेलगाड़ी चलने की आवाज व पुलिस गाड़ी के सायरन की आवाज़ निकालने की कोशिश कर रहा हूँ।– गबलू ने जवाब दिया।

–ऐसे गले से आवाज थोड़े ही निकला करती है।– पिताजी टोमी बंदर ने फिर कहा।

–क्यों नहीं निकल सकती, पिताजी?– कहते हुए गबलू बंदर ने अपने गले से रेलगाड़ी, बस, स्कूटर, पटाखे चलाने की आवाज़ों के साथ ही कई प्रकार के जानवरों की आवाजें निकाल कर पिताजी टोमी बंदर को सुनाई।

पिताजी ने हैरान होते हुए पूछा– यह सब कहाँ से सीखा है।– गबलू बेटा?

–अपने–आप पिताजी... आवाजें निकालने का मुझे शौक़ है। कड़ा अभ्यास करता हूँ। तब जाकर ऐसी आवाजें निकाल पाता हूँ। मैं हमारे

विद्यालय की बाल सभाओं में भी कई विभिन्न प्रकार की आवाजें निकाल चुका हूँ।

पिताजी ने गबलू को समझाते हुए कहा– पढ़ाई करने में कड़ा अभ्यास किया करो। यह सब बेकार काम छोड़ दो।

तभी रसोई से माँ की आवाज आई– बेटा, तुम्हारा मित्र चिंकू गेंडा आया था। आज शाम उसके जन्मदिन की पार्टी है। जल्दी से तैयार होकर तुम अपनी बहन रानी बंदरिया के साथ पार्टी में पहुँचो। शाम को तुम्हारे पापा तुम्हें लेने आ जायेंगे। चिंकू के पापा को कुछ रुपये भी लौटाने हैं।

गबलू बंदर और रानी बंदरिया तैयार होकर चिंकू गेंडा की जन्मदिन पार्टी में पहुँचे। उपहार में उन्होंने चिंकू को प्यारी सी कहानियों की किताब दी।

पार्टी में खाने–पीने की ढेर सारी चीजें थीं। सबने पार्टी का पूरा आनन्द लिया।

गबलू व रानी के पिताजी आकर उन्हें वापस ले जाने वाले थे। लेकिन वे आ नहीं पाए। अन्त में दोनों ने अकेले ही घर लौटने का फैसला किया।

–मुझे उम्मीद है, तुम ठीक से घर पहुँच जाओगे।– चिंकू गेंडा उन्हें विदा करते हुए बोला– तुम दोनों को घर छोड़ आता लेकिन मेरे मामा–मामी पड़ोस के वन से आने वाले हैं।

तुम घबराओ नहीं, दोस्त! हमारा घर ज्यादा दूर तो है नहीं। इतनी सुन्दर पार्टी के लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं।– गबलू बंदर ने कहा और रानी बंदरिया का हाथ पकड़ कर घर की ओर चल पड़ा।

–जरूर कुछ न कुछ ऐसी बात हो गई जिससे पिताजी लेने नहीं आ सके।– रास्ते में गबलू ने कहा।

दोनों भाई–बहन तेजी से चल रहे थे। तब तक अंधेरा हो चुका था और सड़कों पर बत्तियां जल गई थीं।

–गबलू भैया, हम पीछे वाले रास्ते से चलें तो जल्दी पहुँच जाएंगे।– रानी बंदरिया ने सुझाव दिया। दोनों छोटे रास्ते की ओर मुड़ गये। वे बड़ी तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे कि अचानक एक चीख सुनकर उनके हाथ–पांव फूल गये।

उन्होंने ध्यान से देखा, एक बंदर डरा, सहमा खड़ा है और उसके सामने एक बदमाश–सा दिखने वाला भालू चाकू लिए खड़ा है। वह बंदर को धमकियां दे रहा था।

गबलू ने हिम्मत से काम लिया। उसका दिमाग तेजी से दौड़ने लगा वह समझ गया कि इतनी जल्दी पुलिस को नहीं बुलाया जा सकता। अगर ऐसा करे भी तो रानी बंदिरया उसके साथ नहीं दौड़ पाएगी। अपनी बहन को वह अकेली नहीं छोड़ सकता था। रानी बंदरिया ने डर के मारे गबलू का हाथ पकड़ लिया। उसी समय गबलू के मन में एक विचार कौंधा। उसने धीरे से रानी के कान में कुछ कहा। फिर वे अपनी योजना को अंजाम देने लगे।

गबलू फिर रानी बंदरिया को फौरन घने अंधेरे में ले गया और एक पेड़ के पीछे छिप गये।

अचानक रात के सन्नाटे में 'पुलिस... पुलिस की आवाज गूंजी। उसने गोली चलने की आवाज भी निकाली उसके बाद तेजी से सीटी बजने लगी। चाकू वाला जानवर घबरा गया। फिर गबलू पुलिस गाड़ी के सायरन की आवाज़ निकालने लगा।

उस बदमाश भालू की हवाईयां उड़ने लगीं। तभी गबलू ने अपने गले से गोली चलने की आवाज़ और निकाली।

वह बदमाश जंबू भालू चाकू फैंक कर भाग खड़ा हुआ। उस बंदर ने राहत की सांस ली और पुलिस के आने का इंतजार करने लगा।

गबलू और रानी बंदरिया अंधेरे से बाहर निकले और उस बंदर के पास आ गये। पर पास पहुँचते ही वह चौक पड़े– "अरे ये तो हमारे पिताजी हैं।" रानी बंदरिया तो पिताजी की बांहों में लिपट ही गई।

–तुम एक बुरी घटना देखने से बच गये। अगर पुलिस वालों ने बदमाश भालू पर गोली नहीं चलाई होती तो मैं लुट जाता। वह मुझे चोट पहुँचा सकता था। डर कर बदमाश कहीं इधर ही भाग गया है।– टोनी बंदर ने अंधेरे में जंगल

की तरफ देखते हुए कहा।– तुम दोनों को लेने आ रहा था, मेहमान आने के कारण मुझे देर हो गई। क्या तुम थोड़ी देर और इंतजार नही कर सकते थे। क्या होता, यदि वह बदमाश मेरी जगह तुम लोगों पर हमला कर देता? अगर पुलिस नहीं आई होती तो... – कहते हुए टोनी बंदर ने अपने दोनों बच्चों को गले लगा लिया।

–पिताजी, वहाँ कोई पुलिस वाला नहीं था।– गबलू बंदर ने हँसते हुए कहा।

–लेकिन मैंने तो उधर से सीटी की आवाज़ सुनी है। पुलिस सायरन भी बजा था।– टोनी बंदर ने कहा।

–वह तो गबलू भैया की आवाज़ें थीं।– रानी बंदरिया ने मुस्कुराते हुए कहा तो उनके पिताजी को अचरज हुआ।

जब गबलू और रानी बंदरिया ने सारी बात पिताजी को बताई तो वे बोले। सचमुच तुमने समझदारी दिखाते हुए साहस से काम लिया। तुम्हारे अजीब–अजीब आवाज़े निकालने के शौक़ ने मुझे लुटने से बचा लिया।

चंपकवन के जानवरों को जब इस बात का पता चला तो गबलू बंदर को शाबाशी दी तो वह खुशी से झूम उठा।

प्रस्तुति : राधा नाचीज़

पहेलियां

1. सूर्य मेरे पिता,
वर्षा की बूंदें माता।
झुका धनुष सा मेरा अंग,
मेरे कपड़ों में सातों रंग।।

2. कौन खनिज ऐसा है जगत में,
जो भारत में भी पाया जाता।
किसी अंग में लगकर वह
चाँदी सा चमकता जाता।।

3. पेट काट कर पता बनाया,
बिन पांव–सिर पी होता।
बड़े मजे की बात हो गई,
सिर तोड़ा फिर भी पीता।।

4. खुली रात है मेरी माता,
हरी घास है मेरी सेज।
मोती–सा है तन हमारा,
धूप से है हमें परहेज।।

5. दिखने में मैं छोटी हूँ,
पर बहुत ही खोटी हूँ।
जो कोई खेल मुझसे खेले,
भस्म उसे कर देती हूँ।।

6. रोशनी में साथ है,
अंधेरे में साथ नहीं।
कब साथ छोड़ जाए,
उसका कोई विश्वास नहीं।।

7. पानी में जो दौड़ लगाए,
रहे उसी में पड़ी।
जब पानी से बाहर आई,
मरी हुई सी पड़ी।।

8. एक तरह का पाउडर हूँ मैं,
मुझे बनाया एस्पडिन ने।
पानी पीकर मैं जम जाता,
भवन बनाने के काम आता।।

9. तीन अक्षर का नाम है,
पानी जैसा रूप।
हवा तो इसकी मौत है,
जीवन–गरमी व धूप।।

10. हरी थी मन भरी थी,
लाख मोती जड़ी थी।
राजाजी के बाग में,
दुशाला ओढ़े खड़ी थी।।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें

विशेष लेख : दीपांशु जैन

बुलबुल
का रंगीन संसार

गाने और **मधुर तराने** छेड़ने वाले पक्षियों में बुलबुल का स्थान सबसे ऊँचा है। संसार के विभिन्न भागों में जो बुलबुल पाई जाती है, उन में फारस की 'हजार दास्तां' बुलबुल सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कहते हैं कि वह हजार तरह से गाती है। रात–रात भर उसके छोटे कण्ठ से अनेक तरह के मधुर स्वर निकलते रहते हैं, जिन्हें सुनकर लोग आनंद विभोर हो उठते हैं। इस लिहाज से दूसरी बुलबुलें नाम–मात्र की बुलबुलें होती हैं। उनके स्वर में इतनी मिठास और ऐसी मस्ती कदापि नहीं होती। इतना जरूर है कि शाम के समय पेड़ों पर बैठी जब वे चहकती हैं तो उन का बोल भी कानों को मीठा लगता है।

चुलबुली और चहकने वाली चिड़िया : देखने में बुलबुल गौरैया जैसी लेकिन आकार में उससे कुछ बड़ी होती है। इसके सिर पर एक कलगी या चोटी–सी होती है, जिस कारण यह देखने में गौरैया से अधिक सुन्दर और मोहक लगती है। यह कलगी जाति विशेष में छोटी–बड़ी होती है। देर तक एक जगह चुप बैठे रहना इसे सबसे ज्यादा अखरता है। इसलिए यह प्रायः हमेशा उछलकूद करती और चहचहाती ही मिलती है।

हमारे देश में बुलबुल की अनेक जातियां और उप–जातियां मिलती हैं लेकिन इन सबमें गुलदुम और सिपाही बुलबुल ही प्रसिद्ध हैं।

गुलदुम बुलबुल : यह बुलबुल यहाँ की सामान्य और बहुत प्रसिद्ध बुलबुल है, जो लगभग सभी जगह पाई जाती है। कद में 9 इंच लम्बी

इस बुलबुल की पूंछ के नीचे के परों का रंग सुर्ख होता है, जिस कारण यह गुलदुम के नाम से लोकप्रिय है। इसके सिर का तुर्रा, गला और पूंछ गहरी काली तथा शरीर का बाकी हिस्सा भूरे रंग का होता है। डैने भी भूरे रंग के सफेद किनारीदार होते हैं। दुम का सिरा सफेद तथा नीचे का गहरा लाल होता है। इसके नर और मादा दोनों एक–से होते हैं। यह बहुत खिलाड़ी और लड़ाकू होती है। इसकी मुख्य उप–जातियों स्याहा और पंजाब की बर्रहा बुलबुल प्रसिद्ध है।

सिपाही बुलबुल : यह बुलबुल देखने में बहुत सुंदर और तराई के मैदानों से लेकर मध्य प्रदेश तक पाई जाती है। इसके दोनों गालों पर सूर्ख बालों के गुलमुच्छ होते हैं, इसी कारण इसे सिपाही बुलबुल कहते हैं। इसकी पीठ और डैने मटमैले भूरे, छाती सफेद और पैर काले होते हैं। पूंछ गहरे भूरे रंग की होती है और उसका निचला हिस्सा गुलदुम बुलबुल की तरह गाढ़ा लाल होता है।

इसके अलावा भी और कई तरह की बुलबलें पाई जाती हैं। एक सफेद गालों वाली पहाड़ी बुलबुल, जो पहाड़ों पर 7000 फुट की ऊँचाई तक मिलती है। दूसरी जर्द बुलबुल होती है। यह पीले रंग की चिड़िया है और अधिकतर जंगलों में पाई जाती है। इसकी पूंछ और डैने भूरे होते हैं। गर्दन का रंग स्याह रहता है।

मछरिया बुलबुल : उत्तर से दक्षिण तक पाई जाती है। आंख के ऊपरी भाग में मछलियों जैसी पट्टियों के कारण यह मछरिया बुलबुल कहलाती है। कद में 8 इंच लम्बी इस चिड़िया के शरीर का ऊपरी भाग हरा–सा, सिर स्लेटी और डैने भूरे होते हैं। पूंछ भी भूरी होती है और उसका निचला भाग पीला होता है।

बारहमासी पक्षी : खुले मैदानों की अपेक्षा बुलबुल को बाग या झाड़ों में रहना ज्यादा पसंद है। वैसे तो बुलबुल कीड़े–मकोड़े, फल–फूल आदि सभी कुछ खा लेती है, लेकिन लाल रंग के छोटे–छोटे फल खाना इसे बहुत प्रिय है। ये फल यदि पूरी तरह से पके हों तो यह उन्हें तेजी से

चट कर जाती हैं। कभी–कभी यह धान के खेत के खेत उजाड़ देती है और इस तरह उस की खेती को काफी नुकसान पहुँचाती है।

मार्च से सितम्बर तक बुलबुल घोंसला बनाती है और एक बार में दो या तीन अण्डे देती है। अण्डों का रंग हल्का गुलाबी होता है और उस पर बैंगनी रंग की चित्तियां पड़ी रहती हैं। यह साल में लगभग दो बार अण्डे देती हैं।

अपना घोंसला बनाने के लिए बुलबुल अधिकतर नीची झाड़ियां, घास, खर के ढेर अथवा कभी–कभी आस–पास के मकान के बरामदों में भी अपना घास–फूस, पत्तियां और मकड़ी के जाले काम में लाती है। इसका घोंसला देखने में बहुत सुन्दर और प्यालेनुमा होता है। इसे नर और मादा दोनों मिलकर बनाते हैं। वह दो–तीन दिन में बनकर तैयार हो जाता है। जमीन के पास घोंसला होने के कारण सांप, नेवले आदि अक्सर इनके अण्डों को चट कर जाते हैं।

हार–जीत की बाजी : बुलबुल में गाने के अलावा लड़ने की खूबी भी होती है। इसलिए तीतर–बटेर की तरह लोग इन्हें लड़ाने के लिए पालते हैं। यह शौक हमारे देश में पुराने जमाने से है। हालांकि यह अब धीरे–धीरे कम हो चला है, लेकिन बुलबुल पालने के लिए उन्हें पिंजरों में नहीं, काठ या लोहे के अड्डों में बांध कर रखा जाता है। मंजे हुए उस्तादों से इन्हें लड़ने की तालीम दिलाई जाती है। फिर उन पर हार–जीत की बाजी भी पूरी लगती है।

लड़ाने के लिए अधिकतर गुलदुम बुलबुलों को ही पाला जाता है। ये बुलबलें ही लड़ने में सबसे तेज होती है। अखाड़े में उतारने से पहले बुलबुलों को भूखा रखा जाता है और लड़ाते समय उनके बीच शरबत की कटोरी रख दी जाती है। शरबत के एक दो बूंद चख कर उनकी भूख तेज होने लगती है। मौका देखकर कटोरी गायब कर दी जाती है। इससे दोनों बुलबुले एक दूसरे को चोर समझ कर आपस में उलझ पड़ती है और हार–जीत के फैसले के बिना दम नहीं लेतीं। लड़ते समय दोनों के दांव–पेंच और चुस्ती–फुर्ती देखते ही बनती है। ◆

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर **'नी'** अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पैन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

प्रश्न 1. अफगानिस्तान में बोली जाने वाली मुख्य भाषा कौन सी है? ... नी

प्रश्न 2. किस देश की राजधानी बर्लिन है? ... नी

प्रश्न 3. हनुमान की माता का क्या नाम था? ... नी

प्रश्न 4. महात्मा बुद्ध का जन्मस्थान कौन–सा है? ... नी

प्रश्न 5. रेडियो का आविष्कार किसने किया? ... नी

प्रश्न 6. छत्रपति शिवाजी की तलवार का क्या नाम था? ... नी

प्रश्न 7. ऑस्ट्रेलिया के किस शहर में सन् 2000 के ओलम्पिक खेलों का आयोजन किया गया था? ... नी

प्रश्न 8. कैरम के खेल में लाल रंग की गोटी क्या कहलाती है? ... नी

प्रश्न 9. रवीन्द्रनाथ टैगोर की पत्नी का क्या नाम था? ... नी

प्रश्न 10. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का पुराना नाम क्या था?... नी

प्रश्न 11. मशहूर भारतीय कम्पनी रियालंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के संस्थापक कौन थे ? ...नी

प्रश्न 12. 2007 के पहले आई.सी.सी. ट्वेंटी–ट्वेंटी वर्ल्ड कप की विजेता भारत की क्रिकेट टीम का कप्तान कौन था? ....नी

प्रश्न 13. लक्ष्मण की मूर्छा दूर करने के लिए किस बूटी का प्रयोग किया गया था? ... नी

प्रश्न 14. हिटलर किस देश का तानाशाह शासक था? ... नी

प्रश्न 15. भारतीय रेल 'रेल नीर' के नाम से कौन–सा पदार्थ उपलब्ध करवाता है? ... नी

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बाल कहानी : फारूख हुसैन

अक्ल आ गई

रोहित और उसके दोस्त अपनी–अपनी साइकिल लेकर तेजी से जा रहे थे। आगे एक जगह कीचड़ भरा हुआ था। कीचड़ के पास ही एक पेड़ के नीचे सोनी गिलहरी बैठ कर धूप का मजा ले रही थी। रोहित और उसके दोस्त तेजी से कीचड़ में साइकिल निकालते चले गये, जिससे कीचड़ उछलकर सोनी के ऊपर गिरा और सोनी पूरी तरह से कीचड़ में सन गई। वह बेचारी अपनी दशा देखकर रोने लगी। उसे लग रहा था कि यह रोहित और उसके दोस्त जरूर ही कहीं न कहीं चोट खायेंगे।

सभी जानते हैं कि रोहित और उसके दोस्त बहुत ही शरारती हैं। वे अक्सर सभी को परेशान करते रहतें, जिसके कारण सभी उनसे नाराज रहते थे। उनमें सबसे ज्यादा रोहित ही शरारती था। रोहित के मम्मी–पापा भी उसे समझाते कि वह यह सब छोड़ दे लेकिन वह किसी की नहीं सुनता था।

रोहित का स्कूल हरित नगर में पड़ता था रास्ता लम्बा होने के कारण सभी बच्चे साइकिल से ही स्कूल जाते थे। रास्ते में एक रेलवे क्रासिंग पड़ता था जिससे सभी बच्चे बहुत ही सावधानी से उसे पार करते थे। क्योंकि उस समय ट्रेन आने का समय भी होता था; कभी–कभी ऐसा भी हो जाता कि श्याम अंकल रेलवे फाटक बंद करना भूल जाते। लेकिन वे स्वयं ही सावधानी बरतते थे।

लेकिन रोहित और उसके दोस्तों को इससे कोई मतलब नहीं था। वे बिना इधर–उधर देखें कि कहीं कोई ट्रेन तो नहीं आ रही हैं; वे साइकिल निकाल ले जाते। कभी–कभी तो रोहित और उसके दोस्त रेलवे फाटक बंद होने के बाद भी किनारे से साइकिल निकाल ले जाते। जिससे हादसा होने की शंका लगातार बनी रहती थी।

इस की वजह से श्याम अंकल ने उनको कई बार डांटा और उनकी शिकायत स्कूल में भी कर दी, लेकिन रोहित और उसके दोस्तों को कोई फर्क नहीं पड़ा।

अभी कुछ दिनों पहले उन्होंने एक नया खेल शुरू किया था। वे लोग रेलवे की पटरी पर जगह–जगह पत्थर रख देते थे। जब ट्रेन गुजरती तो वे पत्थर टूट कर चूर–चूर हो जाते जिससे उन्हें बहुत ही मजा आता।

एक दिन वे लोग पटरी पर पत्थर रख रहे थे। तभी रमेश वहाँ आ गया। रमेश उन्हीं का सहपाठी था।

"यह तुम लोग क्या कर रहे हो?" ऐसे तो ट्रेन भी पलट सकती है, तुम लोग यहाँ से पत्थर हटाओ, "रमेश ने रोहित और उसके दोस्तों को समझाते हुए कहा।

लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। तभी सामने से ट्रेन आती हुई दिखाई दी। रोहित और उसके दोस्त वहीं पर किनारे खड़े हो गये। रमेश वहाँ से दूर जाकर खड़ा हो गया।

ट्रेन जैसे ही वहाँ से गुजरी तभी न जाने कैसे एक पत्थर उछला और सीधे जाकर रोहित के मुँह पर लगा, रोहित के मुंह से खून की धार बह निकली! यह देखकर रोहित के सभी दोस्त वहाँ से भाग गये। रमेश

ने उसे जब इस हालत में देखा तो वह तुरन्त उसे डॉक्टर के पास ले गया जहाँ उसकी मरहम पट्टी की, यह तो ग़नीमत थी कि पत्थर छोटा था वरना उसकी आँख भी जा सकती थी।

इस हादसे के बाद थोड़े दिनों तक तो रोहित और उसके दोस्त सीधे–सादे बने रहे लेकिन कुछ ही दिनों के बाद वे फिर से शरारत करने लगे।

एक दिन रोहित और उसके दोस्त रेलवे क्रासिंग पर पहुँचे। लेकिन फाटक बंद था क्योंकि सामने ट्रेन आ रही थी। रोहित और उसके दोस्तों को इससे कोई मतलब नहीं था, वे फिर भी रेलवे क्रासिंग पार करने लगे।

रोहित के सभी दोस्तों ने तो क्रांसिग पार कर ली लेकिन न जाने कैसे रोहित की पैंट साइकिल की चैन में फंस गई और वह पटरी पर गिर पड़ा। वह उठ भी नहीं पा रहा था और सामने से ट्रेन आ रही थी, उसे अपनी मौत साफ दिखाई दे रही थी, वह थर–थर कांप रहा था। उसने डर कर अपनी आंखें बंद कर ली।

तभी किसी ने उसे पकड़ा और साइकिल सहित उसको खींच लिया, ट्रेन धड़धड़ाती हुई वहाँ से गुजर गई। उसने आंखें खोली तो देखा कि श्याम अंकल उसकी साइकिल की चैन से उसकी पैंट निकाल रहे थे। उसके बाद वह बेहोश हो गया।

उसकी जब आंख खुली तो उसने खुद को अपने घर पर पाया। उसके मम्मी–पापा और दोस्त भी वहाँ पर ही थे। उसके आंखे खोलते ही सभी खुश हो गये। उसी समय उसने वायदा किया कि अब वह कभी भी शरारत नहीं करेगा और कभी भी फाटक बंद होने पर रेलवे क्रासिंग को पार नहीं करेगा। उसके बाद रोहित पूरी तरह बदल गया। उसे अक्ल आ गयी थी। ◆

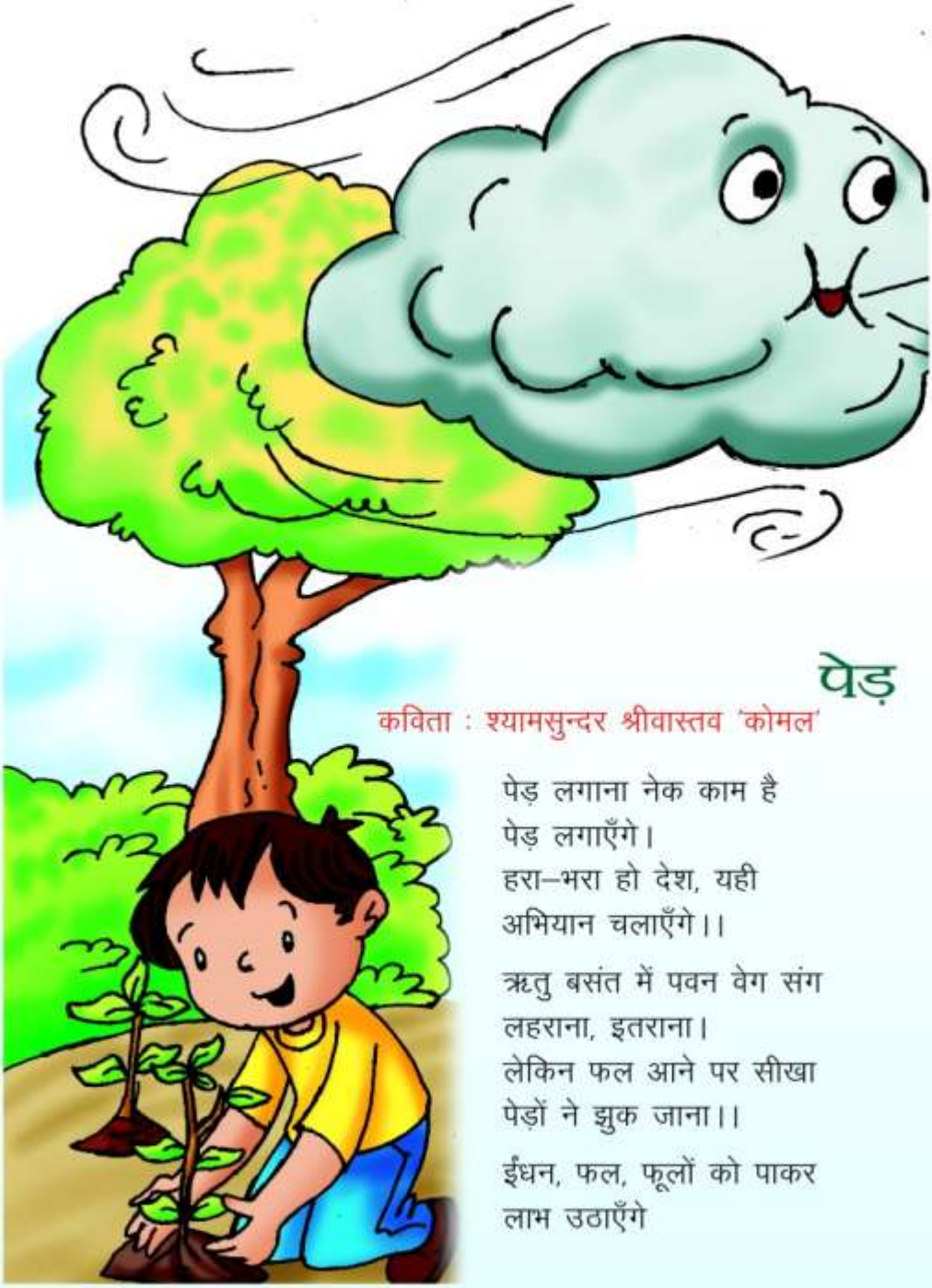

पेड़

कविता : श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

पेड़ लगाना नेक काम है
पेड़ लगाएँगे।
हरा–भरा हो देश, यही
अभियान चलाएँगे।।

ऋतु बसंत में पवन वेग संग
लहराना, इतराना।
लेकिन फल आने पर सीखा
पेड़ों ने झुक जाना।।

ईंधन, फल, फूलों को पाकर
लाभ उठाएँगे

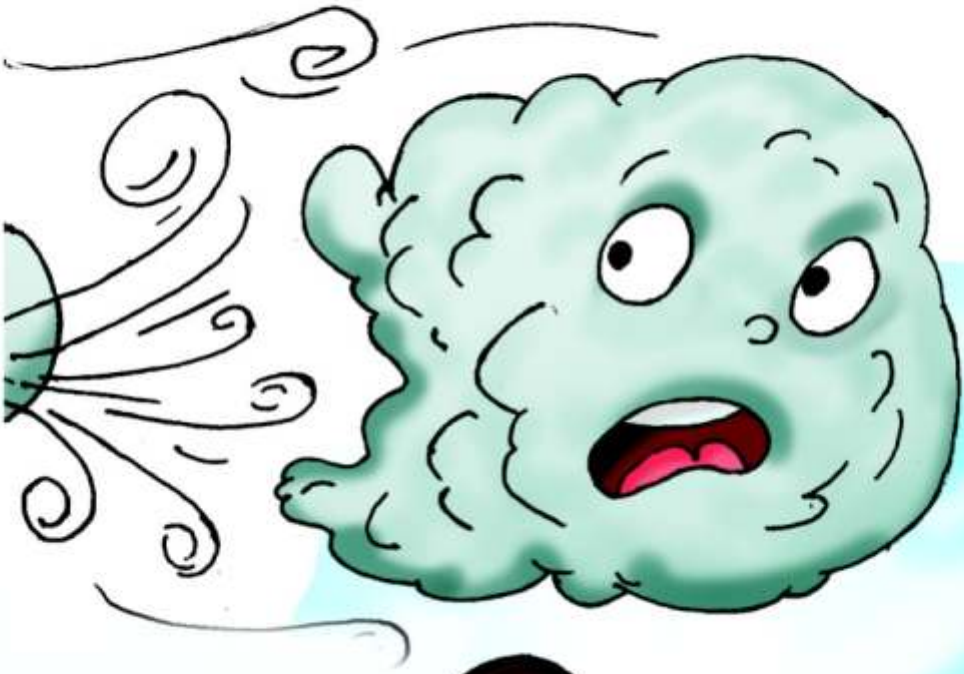

लगाएँगे

वायु–प्रदूषण दूर भगाकर
वर्षा खूब कराते।
तरह–तरह से ये मनुष्य के
काम सदा ही आते।

धरती माँ को हरी चुनरिया
हम पहनाएँगे।

सदा–सदा से पूज्य रहे हैं
इनको कोटि नमन्
ये राही को देते हरदम
शीतल छांव पवन।।

मत काटो पेड़ों को
सबको हम समझाएंगे।

क्या आप जानते हैं ?

- मादा मधुमक्खी केवल एक बार डंक मारती है।
- छछूंदर एक रात में सौ गज लम्बी सुरंग खोद सकती है।
- 85 प्रतिशत सांप जहरीले नहीं होते।
- पके हुए तरबूज में 97 प्रतिशत पानी होता है।
- घोड़े के 40 दाँत होते हैं।
- पैदा होने के समय कंगारू का बच्चा अन्धा होता है।
- कबूतर 60 मील प्रति घंटे की गति से उड़ सकता है।
- कोयल के बच्चों का पालन–पोषण मादा कौआ करती है।
- टिड्डा एक ऐसा कीट है जिसका रक्त सफेद होता है।
- हाथी के दांत उसके जीवन में 6 बार निकलते हैं।
- खटमल 3 वर्षों तक बिना भोजन किये जीवित रह सकता है।
- मधुमक्खी एक पौण्ड शहद बनाने के लिए 20 लाख फूलों से रस एकत्र करती है।
- चीता एक ऐसा जानवर है जो अंधेरे में भी देख सकता है।
- जिराफ ऐसा जानवर है जो बोलता नहीं।
- हाथी को हर वस्तु दुगूनी दिखाई देती है।
- मकड़ी बिना कुछ खाए–पिये लगभग 10 वर्ष तक जीवित रह सकती है।
- थाईलैंड में सफेद हाथी पाए जाते हैं।
- कछुए के दांत नहीं होते।
- केकड़े के दांत पेट में ही होते हैं।
- एक तितली की 1200 आंखें होती हैं।
- घोड़ा खड़े–खड़े भी सो सकता है।
- सेलफिश नामक मछली 80 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से तैरती है।

–प्रस्तुति : रवि कुमार राहुल (बराड़ा)

गाँव से बाहर एक खेत में अमरुद, आम और जामुन के पौधों के अलावा कुछ और भी पौधे उगे हुए थे। इन पौधों के पास ही बबूल का भी एक नन्हा–सा पौधा भी उगा हुआ था। अमरुद, आम और जामुन के पौधों को अपने आप पर बड़ा घमंड था। वे बबूल के पौधे का अकसर मजाक उड़ाते रहते। लेकिन वह चुप रहता और हवा में सहजता से लहलहाता रहता।

एक दिन अमरुद, आम और जामुन के पौधे आपस में बातें कर रहे थे।

आम के पौधे ने कहा, ''मेरा फल भी कम लोकप्रिय नहीं है। मेरे फल को चाहकर सब खाते हैं।''

जामुन के पौधे ने कहा, ''मेरा फल भी कम लोकप्रिय नहीं है। मेरे फल का नाम लेते ही मुंह में पानी आता है। बहुत सी दवाओं में मैं काम आता हूँ।''

अमरुद भी कब चुप रहने वाला था? बोला, ''मेरे फल की भी शान कम नहीं है। मैं भी लोगों के मनपसंदीदा फलों में से एक हूँ।''

आम फिर बोला, ''चलो छोड़ों इन बातों को। यह बताओं कि हमारे पड़ोसी जनाब के फल को कौन पसंद करता है?''

आम के इतना कहने की देर थी कि अमरुद और जामुन के पौधे जोर से हँसने लगे। वे आम का संकेत समझ गये थे। आम बबूल के पौधे की बात कर रहा था।

"अरे हमारे पड़ौसी जनाब के तो क्या कहने? कांटो से दोस्ती, बेढब्बी शक्ल और पत्तों को देखो जैसे ...।" अमरुद बोला।

जामुन के पौधे ने भी तत्काल ताना कस दिया, "और इन जनाब के फल और फूलों को कौन पसंद करता है? भेड़–बकरियां।"

बबूल चुपचाप सब की बातें सुनता रहा।

फिर तीनों ने बबूल के पौधे पर व्यंग्य कसा, "क्यों जनाब, हम सब को तो चाहने वाले बहुत हैं। क्या आपको भी चाहने वाला है कोई...?"

इस बार बबूल के पौधे से रहा न गया। वह बड़े धैर्य से बोला, "हाँ, मेरा भी कोई न कोई अपना है जो मुझे पसंद करता है।"

एक दिन छुट्टी के दिन घूमते–घूमते पंकज, मनदीप, जसकरण और बलतेज खेत की तरफ निकल गये। खेत गाँव से ज्यादा दूर नहीं था।

बलतेज की एक टांग पोलियो के कारण खराब हो चुकी थी। इसलिए वह बैसाखियों के सहारे चल रहा था। उन्होंने जब पेड़ों के नीचे कुछ पौधे उगे हुए देखे तो खुश हो गये।

मनदीप आम के पौधे की तरफ भागा आया और उसे सहलाता हुआ बोला, "वाह! आम का पौधा। इसे तो मैं लेकर जाऊंगा। घर के आंगन में लगाऊंगा। जब यह पौधा बड़ा होगा तो मैं इसके आम खाऊंगा।"

पास ही अमरुद का पौधा था। पंकज उस की तरफ आया और बोला, "मुझे तो भई अमरुद पसंद है। वैसे भी यह पौधा एक दो वर्ष में ही अच्छा फल देने लगता है।"

"और मैं लेकर जाऊंगा इस जामुन के पौधे को। मेरे मम्मी–पापा को जामुन बहुत पसंद है।" जसकरण ने कहा।

उनकी बातें सुनकर तीनों पौधे आपस में संकेत करने लगे। आम बोला, "देखा, मैंने कहा था न कि मैं फलों का राजा हूँ। इसलिए इस लड़के ने सबसे पहले मेरे प्रति ही स्नेह जताया है।"

"मुझे भी तो पसंद किया गया है।" जामुन का पौधा बोला।

"और मुझे भी।" अमरुद का पौधा भी तत्काल झूमता हुआ बोला।

"अब हमारे पड़ौसी को इतने प्यार से कौन ले जायेगा और अपने घर–आंगन में लगायेगा?" आम ने बबूल के पौधे की तरफ तिरछी दृष्टि से देखकर कहा।

बलतेज बबूल के पौधे की तरफ बढ़ा और उसे प्यार से सहलाता हुआ बोला, ''यह मेरा है। मैं इस पौधे को लेकर जाऊंगा। और प्यार से इसे अपने घर के पिछवाड़े में लगाऊंगा।''

पंकज एकदम बोला, 'धत् तेरे की। कैसे पौधे का चयन किया है तुम ने? उधर जाकर देखो कोई और अच्छा पौधा मिल जायेगा।''

बलतेज बोला, ''यह पौधा नहीं है क्या? सभी पौधे बड़े होकर पेड़ बनते हैं और पेड़ों से वनस्पति की सुंदरता बढ़ती है।''

''जानते हो, यह कांटो वाला पौधा है। इसका तुझे क्या लाभ होगा?'' जसकरण ने पूछा।

बलतेज कहने लगा, ''हर पेड़ का कोई न कोई जरूर लाभ होगा। बबूल की दातुन दांतो के लिए अच्छी होती है। इसके फल का आचार डाला जाता है और इसकी गोंद... ।''

उसकी बातें सुनकर दोस्त हँसने लगे।

फिर सभी दोस्तों ने अपने–अपने पौधों को सावधानी से मिट्टी सहित उखाड़ लिया और अपने–अपने घरों के आंगन में आ लगाया।

पहले तो शौक़–शौक़ में पंकज, मनदीप और जसकरण अपने–अपने पौधों की रखवाली करते रहे लेकिन थोड़े दिनों के बाद ही उनके पास पौधों की रखवाली के लिए समय कम पड़ने लगा। कभी पानी दे देते, कभी नहीं। आम का पौधा सूखने लगा क्योंकि उसे घर में पर्याप्त धूप नहीं मिलती थी। अमरुद का पौधा ज्यादा विकसित न हो सका क्योंकि उसके विकास के लिए आंगन की मिट्टी ठीक नहीं थी और जामुन के पौधे को एक दिन पड़ौसी का बछड़ा खा गया।

एक दिन स्कूल में घूमते–घूमते मनदीप बोला, ''यार मेरा आम का पौधा तो सूख गया है।''

''और मेरा भी। सच बताऊं, हमारे आंगन की मिट्टी में ही बहुत कंकर है। इसलिए मेरा पौधा सूख गया। दूसरी बात मेरे पास समय भी बहुत कम था।'' पंकज ने कहा।

जसकरण बोला, ''मैं अपनी क्या बताऊं? हमारे पड़ौसी के बछड़े ने ही मेरे पौधे को खा लिया है।''

जसकरण ने बलतेज से पूछा, "और तुम्हारे बबूल के पौधे का क्या बना?"

पंकज बलतेज के उत्तर से पहले ही बोल पड़ा, "जब हमारे इतने अच्छे–अच्छे पौधे नहीं रहे तो तुम्हारा कहाँ बचा होगा?"

बलतेज ने कहा, " आप शाम को मेरे घर आना। अपनी आँखों से देख लेना।"

तीनों दोस्त शाम को बलतेज के घर की ओर रवाना हो गये। तीनों दोस्तों ने देखा, बलतेज ने बबूल के हरे–भरे पौधे के इर्द–गिर्द इंटों से सुरक्षा की हुई थी और वह विकसित हो रहा था।

बलतेज कहने लगा, "किसी पौधे को उखाड़ कर वैसे ही धरती में लगा देने से कोई पौधा पेड़ नहीं बन सकता। उसकी जिम्मेदारी से रखवाली करना अहम् बात है।"

बलतेज मुस्कुराता हुआ बबूल के पौधे को निहार रहा था।

तीनों दोस्तों को लगा, जैसे बबूल का पौधा बलतेज की तरफ देखता हुआ मुस्कुरा रहा था, झूम रहा था।

• • •

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. अफगानी 2. जर्मनी की 3. अंजनी 4. लुम्बिनी 5. मारकोनी ने 6. भवानी 7. सिडनी 8. रानी 9. मृणालिनी 10. कालापानी 11. धीरू भाई अंबानी 12. महेन्द्र सिंह धोनी 13. संजीवनी बूटी का 14. जर्मनी का 15. पानी।

बोध कथा : दिनेश राय

अंकित प्रथम रहा...

अमर, अनीश और अंकित एक ही कक्षा में थे। तीनों में घनिष्ट मित्रता थी। अमर धनी पिता का बेटा था और साथ ही वह गुणों की खान भी था। लिखावट उसकी इतनी प्यारी थी कि वह शब्दों को मोतियों में पिरो देता था। स्कूल की खेल प्रतियोगिताओं से लेकर बोर्ड की परीक्षाओं तक वह प्रथम स्थान ही प्राप्त करता था। अनीश हमेशा दूसरे नम्बर पर और अंकित हमेशा तीसरा स्थान प्राप्त करता था।

12वीं की परीक्षा सर पर आ गई थी। तीनों दोस्त मिल–जुलकर तैयारी कर रहे थे। एक दिन अमर को अपने पिता जी की जेब से एक सिगरेट की डिब्बी मिली। उसने एक सिगरेट निकाल कर जलाई और पीने लगा। उसे सिगरेट के कश लगाना अच्छा लगा। कुछ दिन में ही अमर को सिगरेट पीने की आदत पड़ गई। अब प्रायः सिगरेट खरीद कर स्कूल में चोरी–छिपे पीने लगा। धीरे–धीरे उसकी दोस्ती ऐसे लड़कों से हो गयी जो तम्बाकू और गुटखा भी खाते थे। अपनी इन्हीं गलतियों को छुपाने के लिए अमर, अनीश और अंकित से दूर–दूर रहने लगा। परन्तु एक दिन अनीश और अंकित को पता चल ही गया कि अमर को नशे की बुरी लत पड़ गई है। अंकित और अनीश को ये सब अच्छा नहीं लगा था। वे दोनों फिर अमर के साथ रहने लगे। कुछ ही दिनों में अनीश को भी सिगरेट पीने की आदत पड़ गई। देखते–देखते वह भी नशा करने लगा। अंकित ने साथ रहने का जब ऐसा प्रभाव देखा तो उसी दिन से उसने उन दोनों का साथ छोड़ दिया।

कुछ दिन बाद 12 वीं कक्षा की परीक्षा हुई। अमर ने पूरे स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अनीश ने दूसरे स्थान व अंकित तीसरे स्थान पर ही रहा। पढ़ाई करने के बाद तीनों ने पायलेट बनने की तैयारी करना शुरू कर दी। अब वे अक्सर अंकित को किसी न किसी बात पर छेड़ा करते थे। इससे अंकित की अमर और अनीश से दूरी और बढ़ गई। पायलेट की परीक्षा देने के लिए अमर और अनीश एक साथ गये परन्तु

अंकित अकेला ही गया। परीक्षा परिणाम जब घोषित हुआ तो पता चला कि अमर प्रथम अनीश द्वितीय और अंकित तृतीय स्थान पर ही रहा।

कुछ दिन बाद चयन समिति ने उनका साक्षात्कार लिया और तीनों को पास कर दिया। अब स्वास्थ्य परीक्षण के लिए उन्हें भेजा गया। परन्तु जब उनका स्वास्थ्य परीक्षण हुआ तो डॉक्टर ने अंकित को स्वस्थ और अमर व अनीश को अस्वस्थ घोषित कर दिया। अमर और अनीश की सारी मेहनत पर पानी फिर गया।

अनीश ने उसी समय कसम खाई कि वह आज से नशा नहीं करेगा परन्तु अमर ने नशा नहीं छोड़ा। कुछ ही दिन बाद अमर के सीने में दर्द

होने लगा तो डॉक्टर ने बताया कि उसे कैंसर हो गया है। कुछ महीने बाद अमर की मृत्यु हो गई। स्कूल की परीक्षाओं और खेल प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाला होनहार बालक अमर जीवन की परीक्षा में फेल हो गया। अनीश अपना इलाज करवाकर ठीक हो गया परन्तु काफी समय के बाद। अब वह 'ओवर ऐज' हो चुका था। आखिर स्कूल की परीक्षाओं व खेल प्रतियोगिताओं में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले अंकित ने सफलतापूर्वक प्रथम स्थान प्राप्त किया। •••

विज्ञान कथा : राधेलाल 'नवचक्र'

स्टेथेस्कोप का जन्म

सेठ अमीरचंद ने अपने तीनों पुत्रों को अध्यापक विजयसेन के हवाले करते हुए कहा कि "आप विज्ञान के सुयोग्य अध्यापक हैं, मेरे इन लड़कों में विज्ञान के प्रति बिल्कुल अभिरूचि नहीं है। आप इनमें किसी तरह रुचि जगाइए।"

"आप बेफिक्र रहें!" अध्यापक विजयसेन ने भरोसा दिया।

दूसरे दिन वह सेठ जी के तीनों पुत्रों को लेकर बगीचे में चले गए। वहाँ उन्होंने तरह–तरह के पेड़–पौधों और पशु–पक्षियों को देखा। फिर वे नदी के किनारे जा निकले। जब वे घूम–फिर कर काफी थक गए तो आराम करने के लिए एक पेड़ की छांह में जा बैठे।

थोड़ी देर बाद अध्यापक वियजसेन ने तीनों से एक साथ पूछा, "क्या तुमने कभी स्टेथेस्कोप देखा है?"

"हाँ, देखा है।" तीनों चिहुंक उठे।

"कहाँ?" सवाल उठा।

"प्रत्येक डॉक्टर के पास", शशि ने जवाब दिया।

"सही कहा," अध्यापक महोदय ने उसकी पीठ थपथपायी। फिर बोले, "सुमन तुम बता सकते हो, डॉक्टर उसका क्या उपयोग करता है?"

"उसकी मदद से डॉक्टर मरीजों के हृदय की धड़कन सुनता है।"

"अरे वाह!" अध्यापक ने उसे शबाशी दी, "तुम तो खूब जानते हो।"

अपनी सराहना सुनकर सुमन खुश हो उठा। मगर सन्तोष का इन सब बातों में तनिक भी मन नहीं लग रहा था। वह झट बोल पड़ा, "सर, कोई कहानी सुनाइए न!"

कहानी सुनाने की बात पर शशि और सुमन ने भी जिद्द पकड़ ली, "हाँ, हाँ, कहानी सुनाइए।"

अध्यापक ने तुरंत कुछ सोचा, फिर सब से पूछा, "कहानी जरूर सुनाऊँगा। पहले यह बताओ कि स्टेथेस्कोप बना कैसे?"

"हमें नहीं मालुम", तीनों ने नाराजगी दिखाई।

"बहुत मजेदार कहानी है इसकी," आध्यापक जी ने बताया।

"ऐसा है तो इसी की कहानी सुनाइए न।" तीनों एक स्वर से बोले।

"बहुत खूब!" अध्यापक विजयसेन मान गए।

"फिर कहिए", तीनों कहानी सुनने के लिए उत्सुक हुए।

"पुरानी बात है। सन् 1816 ई. की एक घटना है। लीनेक नामक एक डॉक्टर था। वह फ्रांस की राजधानी पेरिस में रहता था। कभी–कभी उसके पास ऐसे मरीज भी आते थे जिनकी छाती में किसी–न–किसी प्रकार की बीमारी हुआ करती थी। ऐसे मरीजों में डॉक्टर साहब रुचि भी खूब लिया करता था।" कहते–कहते अध्यापक विजयसेन एकाएक रूक–ठहर गए।

"फिर क्या हुआ?" सुमन ने जिज्ञासा दिखाई।

अध्यापक महोदय ने कहानी आगे बढ़ायी, "डॉक्टर लीनेक के पास जब छाती की बीमारी से संबंधित कोई मरीज आता था तो उसके सामने एक बड़ी कठिनाई उत्पन्न हो जाती थी।"

"किस तरह की कठिनाई?" संतोष ने जानना चाहा।

"दरअसल उस समय तक किसी ऐसे यंत्र का आविष्कार नहीं हुआ था, जिसकी मदद से छाती के मरीजों की अच्छी जांच–पड़ताल की जा सके।" अध्यापक महोदय ने सभी को बताया।

"ऐसी स्थिति में मरीजों का इलाज करने में निःसंदेह डॉक्टर साहब की कठिनाई काफी बढ़ जाती होगी।" शशि ने अपनी बात रखी।

"बिल्कुल।" अध्यापक जी ने शशि की बात को काफी गम्भीरता से लिया।

"तो फिर?" संतोष ने अध्यापक जी की ओर निहारा।

"एक दिन डॉक्टर लीनेक सड़क पर यों ही चहलकदमी कर रहे थे। अचानक सड़क पर खेल रहे दो बच्चों पर उनकी निगाह जा अटकी। दोनों बच्चे एक पतली सी लकड़ी से खेल रहे थे। पहले ने लकड़ी का एक सिरा अपने कान से लगा रखा था और दूसरा लकड़ी के दूसरे सिरे को बांये हाथ से धीरे–धीरे से पकड़ कर अपने दांये हाथ की ऊँगली से लकड़ी को ठक–ठक कर रहा था। पहला बच्चा लकड़ी से गुजरती हुई हल्की आवाज को बड़े ध्यान से सुन रहा था।"

"अच्छा तो?" संतोष ने हुंकारी दी।

"इस साधारण सी घटना ने डॉक्टर लीनेक के दिमाग में एक नई सूझ पैदा की। वह तुरंत अस्पताल आ पहुँचे। वहाँ उसने कागजों की सहायता से एक लबी सी नली तैयार की; कहते–कहते अध्यापक महोदय एकाएक चुप हो गए। गला साफ कर क्षण भर बाद वह फिर बोलने लगे, "जानते हो, उसने उस नली का क्या किया?"

"नहीं तो! समवेत स्वर उभरा।

"उसका एक सिरा उसने छाती की बीमारी से पीड़ित किसी मरीज के सीने पर लगाया और दूसरा सिरा अपने कान से सटा रखा। अगले ही पल उसके होठों पर हल्की सी मुस्काराहट दिखाई दी। डॉक्टर साहब को छाती के मरीजों की अच्छी तरह जांच–पड़ताल करने के लिए जिस एक यंत्र का अभाव बहुत दिनों से खटक रहा था, वह आज उसे अनायास मिल गया।"

"मतलब यह कि कागज की बनी उस नली से डॉ. साहब ने मरीज के हृदय की धड़कन सुन ली।" शशि हैरान हो बोला।

"बिल्कुल",

"फिर तो डॉक्टर लीनेक की एक बहुत बड़ी समस्या आसानी से सुलझ गई अर्थात् हल हो गई।"

संतोष खुश हो बोला।

"ऐसा ही समझ लो," अध्यापक महोदय ने कहा।

"हाँ तो?" सुमन आगे जानने के लिए उतावला हो रहा था।

"और जानते हो, डॉक्टर सीनेक की यही सूझ धीरे–धीरे विकसित होकर एक दिन स्टेथेस्कोप के रूप में हमारे सामने प्रकट हुई, जिसे आज हम प्रायः सभी डॉक्टरों के पास देखते हैं। अब कहो, स्टेथेस्कोप की यह जन्मकथा तुम्हें कैसी लगी?" अध्यापक महोदय ने तीनों भाईयों से एक साथ पूछा।

"बहुत अच्छी", तीनों बोल उठे, "खूब मजेदार रही।"

फिर सभी वहाँ से चल दिए।

पहेलियों के उत्तर :	1. इन्द्रधनुष, 2. अभ्रक, 3. पपीता, 4. ओंस, 5. माचिस, 6. परछाई, 7. नाव, 8. सीमेंट, 9. पसीना, 10. भुट्टा।

पढ़ो और हँसो

एक पोस्टमैन की नियुक्ति करनी थी। उम्मीदवार से पूछा गया कि सूर्य से धरती कितनी दूर है?

उम्मीदवार बोला – सर! अगर आप मुझे इस रूट पर भेजना चाहते हैं तो मुझे यह नौकरी नहीं चहिए।

बेटा : पिताजी, हिमालय पर्वत कहाँ है?
पिता : अपनी मम्मी से पूछो पता नहीं वह चीजों को इधर–उधर क्यों रख देती है?

सोनू, मोनू, दोनों पेड़ पर बैठे हुए थे अचानक सोनू गिर गया तभी मोनू बोला – क्यों थक गए?
सोनू : नहीं पक गया। – प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

एक व्यक्ति अपने कुत्ते को घुमाने ले जा रहा था। रास्ते में उसका मित्र मिल गया।
मित्र : गधे के साथ कहाँ घूमने जा रहे हो?
व्यक्ति : ये गधा नहीं कुत्ता है।
मित्र : मैं तुमसे नहीं कुत्ते से पूछ रहा हूँ।

एक सेठ कार में जा रहा था। अचानक उसे धक्का लगा तो उसने ड्राईवर से पूछा – धक्का क्यों लगा?
ड्राईवर बोला – सेठ जी! पत्थर सामने आ गया।
सेठ बोला – बहुत बेवकूफ हो, तुमने हॉर्न क्यों नहीं बजाया।
– विजय एल. कृष्णनन (कोपरगांव)

गुरुजी : क्या तुम अपनी मम्मी का कहना मानते हो?
छात्र : जी, वह जितना कहती है उससे भी ज्यादा।
गुरुजी : वह कैसे?
छात्र : जब मम्मी कहती है, आधी मिठाई खा लो, तब मैं पूरी मिठाई खा लेता हूँ। – गीतू खनेजा (कलानौर)

राजकुमार : क्यों भई, ये टमाटर ताजा है न?
दुकानदार : बिल्कुल ताजा है साहब! दस दिन से यही बेच रहा हूँ।

ड्राईवर : मैडम, पैट्रोल खत्म हो गया है, गाड़ी आगे नहीं जा सकती।
मैडम : फिर वापस घर ले चलो।

लेखक : आपने मेरा नया उपन्यास पढ़ा? उसकी सब जगह धूम है।
आलोचक : इतनी फुर्सत किसे है? मैं तो इतना व्यस्त हूँ कि जिन पुस्तकों की आलोचना लिखता हूँ, उन्हें भी नहीं पढ़ पाता।

लक्की : (अपने मामा से) मामा जी, आप कैसे नहाते हैं?
मामा : जैसे तुम नहाते हो।
लक्की : अच्छा तो आप भी मेरी तरह नहाते समय रोते हो।

हैप्पी : लोग कहते हैं कि दिन में देखे सपने सच नहीं होते, पर मेरा तो कल दिन का सपना सच हो गया
बंटी : कैसे भला?
हैप्पी : कल दोपहर को मैं क्लास में सोते–सोते सपना देख रहा था कि सर मुझे पीट रहे हैं और अचानक मैं जागा तो पाया कि सचमुच मेरी पिटाई हो रही है।

ग्राहक : भाई साहब, एक गिलास मेरे लिए भी बना दो।
हलवाई : यहाँ गिलास नहीं लस्सी बनती है।

सुशील : क्या आप शाकाहारी हैं?
सिद्धान्त : जी हाँ।
सुशील : तो फिर एक घंटे से मेरा दिमाग क्यों खा रहे हो?

एक व्यापारी ने दूसरे व्यापारी से कहा– देखो, तुम्हारा बेटा मेरी बोरियों से चावल निकाल कर तुम्हारी बोरियों में भर रहा है।
दूसरा बोला : वह तो पागल है।
पहला बोला : अगर पागल है तो तुम्हारी बोरियों से चावल निकाल कर मेरी बोरियों में क्यों नहीं भरता?
दूसरा बोला : वह इतना भी पागल नहीं है।

– राहुल राय (सन्त नगर, दिल्ली)

फरवरी अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम : आरती शर्मा — आयु 12 वर्ष
गाँव : सेर
जिला : हमीरपुर (हि.प्र.)

द्वितीय : मनीषा — आयु 9 वर्ष
सी–38 ए, प्रथम तल
हरी नगर, दिल्ली

तृतीय : दिशा सिंह — आयु 9 वर्ष
गाँव : अरला
जिला : कांगड़ा (हि.प्र.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

खुशी शाक्या (महावीर नगर, भरथना), दिव्या कोहली (मराण्डा), जसकीरत सिंह (सुभाष नगर, दिल्ली), संतोष (से.–11, पंचकूला), अंशुमान (रतिया), अभिषेक गुप्ता (चावबाग, लखनऊ), सानिया एवं समर्थ (गणेश नगर, राजपुरा), तंजिल जिंदल (प्रीत कालोनी, सुनाम), साक्षी शुभम (कस्बा पठियार), प्रिया निरंकारी (झड़ियार), जगरूप सिंह (अधोया), हिमांशु (शिवाजी नगर, गुड़गांव), गौरव देवांगन (लावी नगर, रायपुर)।

अप्रैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर **15 अप्रैल** तक सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम प्रकाशित किये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के **जून** अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं।

रंग भरो

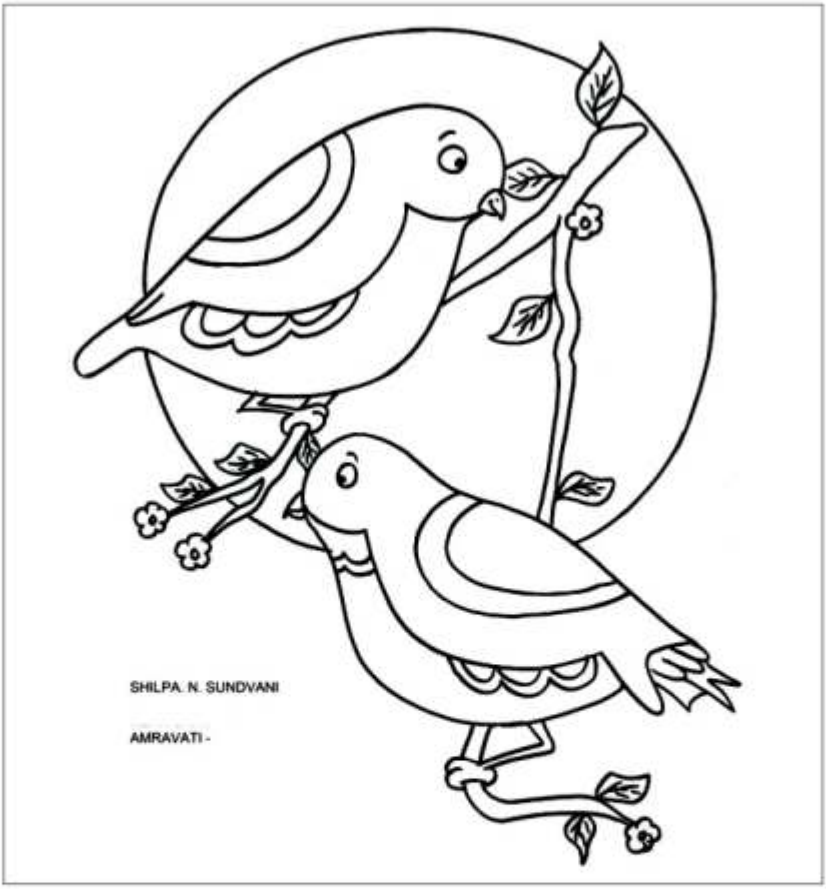

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका भारत के लिए वार्षिक शुल्क 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/– रुपये, दस वर्ष के लिए 600/– रुपये एवं 20 वर्ष के लिए सदस्यता शुल्क 1000/– रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ एक पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेट बैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09

नोट : चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

बाल कविता : सुरेन्द्र कुमार गिरी

पेड़

सुन्दर हरे–भरे पेड़,
छोटे कोई बड़े पेड़।

आम, जामुन, संतरे, केले,
आंवला, हर्र, बहेड़े पेड।

सीखें इनसे अटल रहना,
अपने ठांव अड़े पेड़।

गर्मी, सर्दी, बरसात, आंधियां,
खाते लू के थपेड़े पेड़।

अपना भोजन आप बनाते,
फैलाए धरती में जड़े पेड़।

फल–फूल, लकड़िया देते,
सदियों से ये खड़े पेड़।

कविता : श्यामसुन्दर गर्ग

पेड़

बड़े उपकारी हैं पेड़
माँ समान हैं पेड़।

कितने सुन्दर लगते हैं पेड़
अपने फल न खाते हैं पेड़।
आम–अमरुद सेब नारंगी
फलों की खान है पेड़।

पत्थर भी जब खाते हैं पेड़।
बदले में फल देते हैं पेड़।

प्रकृति का वरदान है पेड़।
प्राणवायु के खजाने हैं पेड़।
हरियाली करते हैं पेड़।
प्रकृति का प्रदूषण हटाते हैं पेड़।

किट्टी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
टन टन टन.....टन
SCHOOL
Hello माँ। बहुत भूख लगी है।
किट्टी तुम हाथ मुँह धो लो मै अभी खाना देती हूँ।

बस माँ अब मैं सोने जा रही हूँ फिर मुझे पढ़ना है Exam पास में है।
ठीक है।
किट्टी ओ किट्टी
....5 बज गये उठ जाओ।
हू...ऊँ
शाहजहाँ ने ताज़महल बनवाया था। शाहजहाँ ने ताज़महल बनवाया था।

किट्टी रट्टा मत लगाओ। Answer को समझने की कोशिश करो।
ठीक है माँ कर रही हूँ।
अरे ताज़महल किसने बनवाया था। याद नहीं आ रहा।
सिर्फ 15 मिनट रह गये।
माँ आप सही कह रही थी।
कोई बात नहीं किट्टी आगे के Exam में जैसे मैं बताती हूँ वैसा करना।

बेटी Answer को अच्छी तरह समझने के लिए पूरा Chapter पढ़ो।
ठीक है माँ।
वाह मैने सब कर दिया।
मैने सब Answer कर दिये।

फोटो फीचर

अहा! बैसाखी आ गई, हम तो चले भांगड़ा पार्टी के साथ बैसाखी मेले में शामिल होने के लिए।
– यशराज एवं जसमीन (गिदड़बाहा)

मैं तो यहाँ खेलने आया हूँ खुले मैदान में।
–समदीश (रायपुर)

मैं मेले में सभी को नाश्ता कराऊंगी। मेले के लिए ही मैंने यह खास साड़ी निकाली है।
–नाइसा (मण्डला)
←

मैं तो डांस सीख रहा हूँ, अभी मेरी प्रेक्टिस जारी है। – वंश (सांगली)

आहा, हा, तुम लोग मेले में मेरे डांस स्टेप तो देखना। देखकर हैरान रह जाओगे।
– आलिया (सांगली)
←

मुझे तो फुटबाल खेलना बहुत अच्छा लगता है, इसमें मेरा शरीर चुस्त–दुरुस्त रहता है।
– विवेक (कोडानार)

फोटो फीचर

मैं तुम लोगों की बातें सुन–सुनकर हैरान हो रही हूँ। तुम लोग इतनी उछल–कूद मत किया करो। – सिमरन (चेलइ बाजार)

यही तो मैं भी कह रही हूँ। छोटे बच्चों को ज्यादा शैतानी करने से बचना चाहिए।– हिमांशी (कोटा)

हम दोनों तो ज्यादा समय होमवर्क पूरा करने में लगाते हैं। परीक्षा में हमें अच्छे नम्बर जो लाने हैं।
– अनन्या एवं केनिशा (दिल्ली)

हम दोनों को तो क्रिकेट खेलना बहुत पसंद है। देखना आगे चलकर क्रिकेट में देश का नाम रोशन करेंगे।
– आशीष एवं प्रतीक (कोटा)
→

मैं तो अभी खिलौनों के साथ खेल रही हूँ। बड़ी होकर मैं भी एक खिलाड़ी बनूंगी। –सुहानी (गोवा)

आइडिया तो अच्छा है। सोच के साथ जमकर परिश्रम किया जाए तो सफलता अवश्य मिलती है। – हनी एवं हंसिका (अजमेर)

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

मीठी बोली

प्यार सभी का पाना है तो, बस मीठा यही मीठा बोलो।
जब भी बोलो मीठा बोलो, सबके मन में मिश्री घोलो।

तोता कोयल मधुर बोल कर,
सबका मन हर्षाते हैं।
बुलबुल के मादक गीतों से,
प्राण हरित हो जाते हैं।

लेकर शिक्षा जीव–जगत से, इनके समान ही तुम हो लो।
जब भी बोलो मीठा बोलो, सबके मन में मिश्री घोलो।

मीठी बोली का जादू तो,
अद्‌भुत रंग दिखाता है।
मानव की जीवन बगिया को,
फूलों सा महकाता है।

मीठी बोली को वश में कर, इसकी महिमा को तुम तोलो।
जब भी बोलो मीठा बोलो, सबके मन में मिश्री घोलो।

मधुर बोल कर अन्जानों को,
अपना मित्र बना सकते हो।
पत्थर दिल पिघला सकते हो,
बिगड़े काम बना सकते हो।

सत्य और मीठे वचनों में, तुम अपना सर्वस्व डुबो लो।
जब भी बोलो मीठा बोलो, सबके मन में मिश्री घोलो।

मीठी–मीठी बातें कर के,
जीवन का आनन्द उठाओ।
सदा दूसरों को सुख बांटों,
अपना जीवन सुखी बनाओ।

मीठी बोली मस्त पवन है, मस्त पवन से तुम भी डोलो।
जब भी बोलो मीठा बोलो, सबके मन में मिश्री घोलो।

कहानी : हरजीत निषाद

बेईमानी का फल

गोमती नदी के तट पर भवानीपुर नाम का एक खूबसूरत गाँव था। नदी के किनारे पर बसा होने के कारण गाँव के चारों ओर हमेशा हरियाली रहती थी। गाँव के बाहर नदी के तट पर बरगद का एक विशाल पेड़ था, जिस पर सैकड़ों पक्षियों का बसेरा था। भवानीपुर गाँव में भगवान दास का परिवार भी रहता था। भगवानदास खेती–किसानी करके अपने परिवार का पालन–पोषण करता था। रामू और श्यामू भगवान दास के दो बेटे थे। रामू शुरू से ही शरारती और काम से जी चुराने वाला था जबकि श्यामू सीधा–साधा और मेहनती था। खेती के कामों में रामू और श्यामू पिता का हाथ बंटाते थे। गुड़ाई, निराई और फसलों को पानी देने के कार्य में वे पिता को सहयोग देते थे लेकिन रामू अपनी चालाकियों से बाज नहीं आता था।

भगवानदास कुछ दिनों के बाद बीमार रहने लगे और एक दिन वो इस दुनिया से विदा हो गए। परिवार में कुछ समय तक पिता के वियोग के कारण दुःख का माहौल रहा। बाद में धीरे–धीरे सब ठीक होने लगा। समय बीतता गया, अचानक एक दिन रामू काम के बारे में श्यामू से झगड़ा करने लगा। पंचों को बुलाकर पिता द्वारा छोड़ी गई सम्पत्ति का दोनों ने आपस में बंटवारा कर लिया। सब चीजें तो बराबर–बराबर बंट

गई लेकिन एक चीज को बांटने में समस्या आ खड़ी हुई। समस्या यह थी कि भैंस एक ही थी उसे दो भागों में कैसे बांटा जाए? तभी रामू के चालाक साथियों ने, जो पंचायत में मौजूद थे, सुझाव दिया कि भैंस को दो हिस्से में बराबर–बराबर बांट लो। यह सुनकर सभी लोग उनकी मूर्खता पर हँस पड़े कि भला भैंस को कैसे आधा–आधा बाँटा जा सकता है।

रामू हमेशा बेईमानी का सहारा लेकर, लाभ उठाना चाहता था। वह हमेशा ऐसे अवसरों की तलाश में रहता था। चालाकी अपनाते हुए रामू ने कहा– ऐसा कर लो, भैंस का आगे का हिस्सा मैं श्यामू को दे देता हूँ और पीछे का हिस्सा मैं रख लेता हूँ। भोला–भाला श्यामू अपने भाई रामू की शरारत को समझ न सका और उसने हाँ कर दी।

अब श्यामू दिन–रात भैंस को चारा लाकर खिलाता और सुबह–शाम दूध निकाल कर मजे से रामू पीता। भैंस का पिछला हिस्सा उसका जो हुआ। श्यामू अपने भाई की इस चालाकी से परेशान हो उठा कि परिश्रम वह करे और लाभ किसी और को मिले। उसने गाँव के कुछ समझदार लोगों को अपनी व्यथा कह सुनाई, गाँव के समझदार लोगों

(शेष पृष्ठ 62 पर)

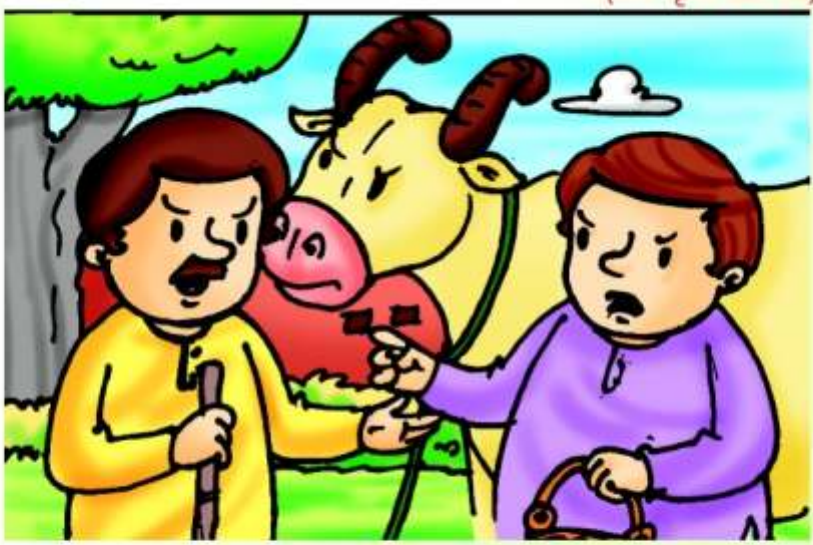

रोचक जानकारी : किरण बाला

ऐसे भी हैं हेलिकॉप्टर

हेलिकॉप्टर तो आपने कई देखें होंगे हालांकि उसमें बैठने का सौभाग्य बहुत कम लोगों को होता है। क्या आप जानते हैं इसकी शुरूआत कैसे हुई? सबसे पहले लियोनादों द विचीर ने हेलिकाप्टर टाइप वायुयान बनाने का विचार प्रस्तुत किया था। यह बात सन् 1519 की है। परन्तु उनसे पहले फ्रांसिसियों ने खिलौने हेलिकॉप्टर बना लिए थे।

सन् 1909 में अगोर सिकोरस्की ने रूस में एक हेलिकॉप्टर बनाया था परन्तु पहली व्यावहारिक मशीन फॉके एचगेलिस थी जिसे 1936 में उड़ाया गया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जब हल्के इंजनों का विकास हो गया तो इनकी सहायता से मनुष्य ने पहली बार हेलिकॉप्टर से उड़ान भरी। इसके बाद तो इसके विकास का क्रम लगातार चलता रहा। सन् 1936 में जर्मनी की फोकबुल्फ कंपनी ने एक सफल हेलिकॉप्टर के निर्माण की घोषणा की जो कि 1937 में 3352 मीटर यानि 11 हजार फुट की ऊँचाई पर 112 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से सफलतापूर्वक उड़ा।

एक मनुष्य द्वारा रॉकेट की मदद से चलाए जाने वाला सबसे छोटा मिनिकॉप्टर एअरोस्पेस जनरल कंपनी ने बनाया है जिसका वजन 72.5 किलोग्राम है जो कि 297 किलोमीटर प्रतिघंटे की गति से 400 किलोमीटर तक परिभ्रमण कर सकता है।

आकार की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा हेलिकॉप्टर पूर्व सोवियत संघ का वी–12 है। इसे चार 6500 अश्वशक्ति 4847 किलोवॉट वाले टर्बोशाफ्ट इंजर से शक्ति मिलती है। इसके रोटर टिप पर स्थित विगस्पा 219 फुट 10 इंच का है और इसकी लंबाई 12 फुट साढ़े चार इंच है। इस हेलिकॉप्टर का वजन 103.3 टन है।

दुनिया का सबसे बड़ा हेलिकॉप्टर एमआई 26 है। रूस में बने ऐसे आठ हेलिकॉप्टर भारतीय वायुसेना के पास हैं। एक हेलिकॉप्टर अधिकतम 5000 किलोग्राम भार की सामग्री या 100 यात्रियों को ले जा सकता है।

हेलिकॉप्टर की सबसे तेज चाल का विश्व रिकार्ड 11 अगस्त 1986 को ट्रेवर एगिनटन ने 400.87 किलोमीटर प्रतिघंटे का सोमरसेट में बनाया था।

क्या कोई व्यक्ति अकेले हेलिकॉप्टर से विश्व परिक्रमा कर सकता है। 22 जुलाई 1983 को डिक स्मिथ (आस्ट्रेलिया) ने हेलिकॉप्टर की सहायता से अकेले ही विश्व परिक्रमा करने का श्रेय प्राप्त किया। उन्होंने 5 अगस्त 1882 को अपनी उड़ान एक बेलमॉडल 206 एल, लांग रेंजर से फोर्ट वोर्थ टेक्सास अमेरिका में स्थित बेल हेलिकॉप्टर केन्द्र से शुरू की थी और वे 56724 किलोमीटर की दूरी तय करके वहीं पर लौटे थे। ■

पृष्ठ 60 का शेष भाग

ने कहा– कल ऐसा करना, कल जब रामू दूध निकालने लगे तब तुम भैंस के मुंह पर डंडा मारना, जिससे भैंस बिदक जाएगी, इसका परिणाम यह होगा कि रामू दूध नहीं निकल सकेगा। श्यामू ने अगले दिन ऐसा ही किया। जब रामू ने ऐसा करने से मना किया तो श्यामू ने कहा– भैंस का आगे का हिस्सा मेरा है, इस हिस्से में मैं जो चाहूं करूं, तुम्हें क्या?

यह देख कर रामू की अक्ल चक्कर खाने लगी। उसे अपनी बेईमानी का फल मिल चुका था। अब उसे कुछ सूझ नहीं पड़ रहा था कि आगे क्या किया जाए। रामू ने एक बार पंचों को फिर से बुला कर निर्णय करवाना चाहा। पंचायत बुलाई गई। पंचों ने इस बार भैंस को चारा खिलाने और दूध निकालने का काम दोनों भाईयों में बराबर–बराबर बांट दिया। अब रामू और श्यामू भैंस को चारा खिलाते और जो दूध मिलता उसे बराबर–बराबर बांट लेते। इस प्रकार आगे से सब ठीक चलने लगा।

हमें ध्यान रखना चाहिए कि रामू की तरह चालाकी करना ठीक नहीं होता। जीवन में हर काम ईमानदारी और मेहनत से करने वालों को कभी कोई कमी नहीं आती। ऐसा व्यक्ति जीवन में खुशहाल रहता है और हर प्रकार की सफलता प्राप्त करता है।

लेख : पृथ्वीराज

फ्लोरेंस नाइटिंगेल

एक दिन एक छोटी–सी लड़की स्कूल से अपने घर जा रही थी तो रास्ते में उसे एक कुत्ता मिला। कुत्ते की एक टांग घायल थी। घाव पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। लड़की को कुत्ते पर दया आ गई। वह उसे अपने घर ले आई। उसने कुत्ते के घाव का गर्म पानी से धोया और उस पर पट्टी बांध दी। करीब एक सप्ताह तक रोज पट्टी करने के बाद कुत्ता बिल्कुल ठीक हो गया।

बच्चों क्या आप जानते हो वह दयालु लड़की कौन थी? वह थी– फ्लोरेंस नाइटिंगेल।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जन्म इटली के फ्लोरेंस नगर में 15 मई 1820 को हुआ था। उसके माता–पिता ने उसका नाम उसी नगर के नाम पर रख दिया, जहाँ वह पैदा हुई थी। उसके पिता का नाम विलियम एडवर्ड नाइटिंगेल और माता का नाम फैनी नाइटिंगेल था।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल बड़ी कोमल हृदय थी। किसी के दुःख को देखकर वह दुःखी हो जाती थी। उसके मन में इच्छा उठती थी कि दूसरे के दुःख को दूर करने के लिए कुछ करें। जब वह थोड़ी बड़ी हुई तो उसे नर्स का काम अच्छा लगने लगा। सारा दिन रोगियों और घायलों की सेवा करना ही उसे जीवन का उद्देश्य लगा। उसने निश्चय कर लिया कि वह नर्स बनेगी। जब उसके माता–पिता को उसकी इस इच्छा का पता चला तो उन्होंने नर्स बनने की अनुमति नहीं दी। वे इस काम को पसंद नहीं करते थे।

जब फ्लोरेंस को माता–पिता की अनुमति नहीं मिली तो उसे बड़ा दुःख हुआ वह उदास रहने लगी। उसके दृढ़–निश्चय को देखकर माता–पिता को भी झुकना पड़ा। उन्होंने उसे नर्स बनने की अनुमति दे दी।

फ्लोरेंस ने अस्पताल में जाकर नर्स का कार्य सीखा। कुछ दिनों बाद उसे लंदन में नर्स संस्थान का अध्यक्ष बना दिया गया। उसने बड़ी निष्ठा और तल्लीनता से अपने काम को किया। इस समय उसकी लगन को देखकर उसके माता–पिता को मानना पड़ा कि उसे उसके मार्ग से हटाना अन्याय होता।

उन दिनों इंग्लैण्ड एक युद्ध में उलझा हुआ था। युद्ध में घायल होकर अनेक सैनिक अस्पतालों में आने लगे। अधिक गंभीर घायलों को 'स्कूटारी' नामक अस्पताल में लाया गया। सरकार ने इस अस्पताल में रोगियों की देखभाल की जिम्मेदारी फ्लोरेंस नाइटिंगेल को सौंप दी। इससे पहले अस्पताल में घायल सिपाहियों की देखभाल का उचित प्रबंध नहीं था। पर फ्लोरेंस ने अस्पताल की काया पलट दी। वह रात–दिन रोगियों की सेवा में जुट गई। वह स्वयं प्रत्येक रोगी से मिलती थी। वह प्रयत्न करती थी कि किसी रोगी को कोई परेशानी न हो। रात को वह हाथ में लैंप लेकर रोगियों के पास जाती थी। उसे देखते ही रोगियों के चेहरों पर मुस्कान खिल जाती थी। बीमार सैनिक उसे 'लैंपवाली देवी' कहकर पुकारते थे। फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने न केवल अस्पताल में ही घायलों की चिकित्सा का प्रबन्ध किया अपितु वह लड़ाई के मैदान में भी गई। वहाँ उसने शिविरों में सैनिकों की चिकित्सा का प्रबंध किया। दिन–रात काम करने से उसका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। मजबूर होकर उसे इंग्लैण्ड लौटना पड़ा।

इंग्लैण्ड में उनका जोरदार स्वागत हुआ। किंग एडवर्ड सप्तम् ने उसे सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया। उसका नाम सारे विश्व में प्रसिद्ध हो गया।

90 वर्ष की आयु में 13 अगस्त 1910 को फ्लोरेंस नाइटिंगेल का निधन हो गया। इंग्लैण्ड की जनता ने उनकी याद में एक शानदार स्मारक बनवाया।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का विश्वास था कि मानवता की सेवा ही भगवान की सच्ची सेवा है। उन्होंने जीवन भर मानवता की सेवा की, इसीलिए आज भी सारा संसार उनका नाम बड़े आदर से लेता है।

आपके पत्र मिले

मैं पिछले वर्ष से हँसती दुनिया पढ़ रहा हूँ। यह पत्रिका अपने आप में एक अनूठी पत्रिका है। गुणग्राह्यी लोग ही बता सकते हैं कि इस पत्रिका के अन्दर कौन–कौन सी सामग्रियां परोसी जाती हैं।

स्तम्भ 'भैया से पूछो' पढ़ने से जी नहीं भरता, उससे और अधिक प्रश्न–उत्तर पढ़ने का जी करता है क्योंकि यह स्तम्भ अत्यन्त रोचक है। जैसे थोड़ा भोजन करने पर भरपेट भोजन करने की इच्छा नहीं मिटती, उसी प्रकार और अधिक जानकारी के लिए अगले अंक का बेसब्री से इंतजार करता रहता हूँ। जब तक दूसरा अंक प्राप्त नहीं हो जाता तब तक उसी अंक को बार–बार पढ़ता हूं।

दिसम्बर अंक में 'कभी न भूलो', 'अपवित्र अन्न', 'बौनों का न्याय' और 'इतने प्यार से' कहानियां काफी अच्छी लगीं। 'पढ़ो और हँसो' बहुत अच्छे लगे। यह स्तम्भ मुझे खूब हँसाता है। इससे मेरी तबीयत खुश हो गई और मन भी प्रसन्न हो गया।

– विष्णुदेव मण्डल (गनौली)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। जनवरी का अंक प्राप्त हुआ। हमेशा की तरह इसमें ज्ञानवर्द्धक कहानियां एवं लेख उपलब्ध थे।

इस अंक की सभी कहानियां अच्छी थीं, लेकिन मुझे 'तो दुःख और भी बढ़ जाता' (कमल सौगानी) अत्यन्त मार्मिक एवं दिल को छू लेने वाली लगी।

'हँसती दुनिया' पत्रिका को मैं पूरे परिवार को पढ़ने के लिए प्रेरित करता हूँ।

– जगदीश मेहानी (रायगढ़)

मैं हँसती दुनिया का पाठक हूँ। यह पत्रिका मुझे काफी अच्छी लगती है। यह हमारे लिए ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है। इसमें 'कभी न भूलो' हमें जीवन में विकास के मार्ग पर तथा चलने का मार्ग बताता है। मुझे इसमें हर कहानी अच्छी लगती है।

– सन्नी कुमार (वैशाली)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 ब	ह	2 न		3 घ	
थु		4 ज	5 न	र	6 ल
7 आ	8 स	मा	न		की
	हा		9 द	10 रा	र
11 फि	रा	12 क		य	
रो		13 बी	जा	पु	र
14 ज	ह	र		र	

TU HI NIRANKAR

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SUPER AQUA®

R.O. System

WHITE GOLD®

AQUA FRESH

Reverse Osmosis

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

Wholesale & Retailer of all type of **Water Purifier, Water Dispenser, R.O. System & Commercial R.O System 100 to 500 Ltr.**

Free Gift (5Ltr. Cooker)

Free Gift (Juicer Mixer)

Free Gift (Toaster)

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

FREE DEMO WATER TESTING

आसान किस्तों पर उपलब्ध 0% FINANCE

for enquiry call Customer Care

09650573131

(Arvind Shukla)

स्वच्छ पानी, स्वस्थ जीवन

SATGURU HOME APPLIANCES

(Call. 09910103767)

Head office. E-1/23, Ground Floor Sec-16, Rohini Nr. Jain Bharti Public School, Delhi-110085

Mumbai office. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex Nr. T.V Tower, Badlapur (East) Thane, Maharashtra,

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा, दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएं।

MUBAI : Vashvali, Kurla, Dadar, Thane, Ulhas Nagar, Kalyan, Badlapur **MAHARASHTRA** : Pune, Aurangabad, Varsa, Nagpur, Buland, Kohlapur **SOUTH INDIA** : Hyderabad, Belgaum **UTTAR PRADESH** : Allahabad, Gorakhpur, Mathura, Agra, Kanpur, Jonpur, Lucknow, Azamgarh **UTTRAKHAND** : Dheradun, Haldwani, Rishikesh, Haridwar **PUNJAB** : Chandigarh, Hoshiarpur, Bhatinda, Patiala, Jalandhar, Ludhiana **BIHAR** : Patna, Samastpur, Darbhanga, Gaya, Bhagalpur **WEST BENGAL** : Kolkata, Sealdah **RAJASTHAN** : Jaipur, Jodhpur

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS REGD.

A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS

78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009

TELE : (Showroom)

27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133

E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)